कामकाजी महिला

वर्ष 2 अंक 6 अगस्त, 1990 मूल्य : एक रु०

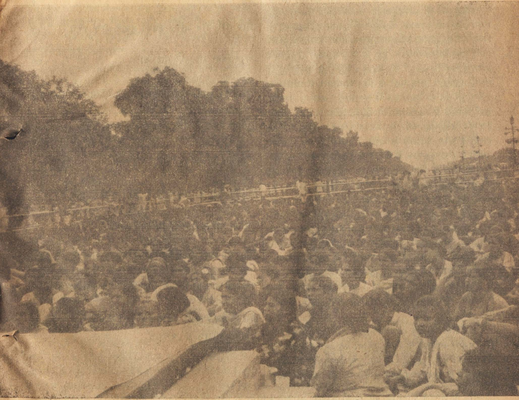

नई दिल्ली में 7 अगस्त को तैयारी समिति की ओर से आयोजित आंगनवाड़ी महिलाओं के धरने का एकांश

पूर्वी योरोप की घटनाओं से भारत की महिलाएं चिंतित

पूर्वी यूरोप तथा सोवियत संघ के हाल की घटना-विकास से आमतौर से भारत की महिलाएं और खासकर कामकाजी महिलाएं गम्भीर रूप से चिंतित हैं। समाजवादी व्यवस्था और पूंजीवादी व्यवस्थाओं के संबंध में बुनियादी सवाल उठाए जा रहे हैं। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन जैसे मजदूरवर्ग के अविसंवादी नेताओं की शिक्षा एवं विचारधाराओं के बारे में ऐसे लोग सवाल उठा रहे हैं जिन्हें क्रांति, कुर्बानी और उस महान संघर्ष जिससे समाजवादी उपलब्धियां हासिल हुई, से गुजरने का मौका नहीं मिला। रूस में 1917 की महान् क्रांति का सबसे पहला ऐलान था सभी महिलाओं के लिए समानता, मताधिकार, भूमिहीनों को जमीन, वेतन में समानता, आदि। समाजवादी समाज में महिलाओं को मिली सुविधाओं का हमारे देश की महिलाएं गर्व से जिक्र करती है, उसका प्रचार करती है और मिशाल के तौर पर गर्व से उसे सामने रखती है। उस समाज में बेरोजगारी नहीं, महिलाओं को मातृत्व लाभ के लिए छः महीने से लेकर एक साल तक की सवेतन छुट्टी सहित अन्य अनेक सहूलियतें हासिल है, बच्चों के लिए पलना घर, उनकी देख-रेख और शिक्षा के लिए बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध हैं। हमें सोवियत बहनों पर नाज था। सुदूर अंतरिक्ष पर जाने वाली प्रथम महिला वेलेंतिना तेरिसकोवा सोवियत नारी थीं। समाजवादी व्यवस्था में महिलाओं ने इन उपलब्धियों को हासिल की —कैसे ? क्यों इस तरह की सुविधाएं पूंजीवादी व्यवस्था में महिलाओं को नहीं मिलती ? अमरीका, इंग्लैंड जैसे विकसित पूंजीवादी देश में भी यह क्यों नहीं सम्भव हुआ ?

इसलिए जब हमें यह समाचार पढ़ने को मिलता है कि जरूरी सामानों के लिए लोगों को लम्बी लाइन में खड़ा रहना पड़ रहा है या जब हमें पलनाघर या अन्य सुविधाओं के लिए प्रदर्शनरत महिलाओं की तस्वीर देखने

इस अंक में

पूर्वी योरोप की घटनाओं से भारत की महिलाएं चिंतित 3

का॰ बी॰ टी॰ आर॰ हमारे बीच हैं 5

पुत्र का पत्र पिता के नाम 8

का॰ बी॰ टी॰ आर॰ हमेशा हमारे बीच रहेंगे 9

अपराधियों को कड़ी सजा दो 10

संसद पर आंगनवाड़ी महिलाओं की ऐतिहासिक रैली 12

दुर्गापुर में कामकाजी महिला सम्मेलन 16

12 जून को जयपुर प्रदर्शन की रिपोर्ट 17

दवा उद्योग की दाब-धौंस के आगे सरकार झुके नहीं 19

आंगनवाड़ी मुलाजिम यूनियन, पंजाब 20

त्रिपुरा में इंका-टी यू जे एस का आतंक राज 21

जनवादी महिला समिति का तीसरा राज्य सम्मेलन 22

गैस पीड़ित महिला उद्योग कर्मचारी एकता यूनियन भोपाल का आह्वान 23

सीटू के अखिल भारतीय कामकाजी महिला समन्वय समिति के लिए विमला रणदिवे की ओर से 6, तालकटोरा रोड, नई दिल्ली-110001, (फोन नं॰ 384071) से सम्पादित और प्रकाशित तथा प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, ए-21 झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

को मिलता है तो हमारी महिलाएं अचंभा में पड़ जाती है, उन्हें ठेस पहुंचता है। शुरू में तो वे इसे मानने के लिए तैयार नहीं थी और सोचती थी यह मिथक प्रचार मात्र है पर जब जानकार सूत्रों से इन खबरों का सत्यापन मिलता है तो इसे नोट करना जरूरी हो जाता है। अधिकारिक समाचार सूत्रों के जरिए यह बताया जा रहा है कि 1985 से शुरू की गई 'पेरेस्त्रोइका' 'व ग्लासनोस्त' सोवियत संघ में सफल नहीं हो पाई। सी पी एस यू का 28वां पार्टी कांग्रेस में गंभीर बहस जारी है और हमें उम्मीद है कि शायद इस मुश्किल परिस्थिति से वह निकल पायेंगे। पर हमें जिस बात की चिंता है वह है यह कि इस नए परिस्थिति में—आर्थिक सुधार, निजीकरण आदि में—महिलाओं की स्थिति क्या होगी, किस हद तक सोवियत संघ तथा पूर्वी योरोप की महिलाओं की काम की स्थिति प्रभावित होगा।

ग्रामीण क्षेत्र में कामगार महिलाओं पर पिछले जुलाई 1989 को मास्को में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय बैठक में एक महिला ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता ने महिलाओं की वर्तमान स्थिति के बारे में बताते हुए कहा कि उन्हे काम से बरी कर दिया जाय। कारण के तौर पर उसने घरेलू कामकाज का बढ़ता बोझ, सामानों के लिए लम्बी कतारों में खड़े होना बच्चों की देख भाल आदि बताया। उनका पुरुष सहकर्मी भी उनका समर्थन करते हुए बताया कि काम से घर लौटकर वह जब देखते हैं कि उनकी पत्नी काम के बाद घर का कामकाज भी करने में लगी है तो उन्हें खराब लगता है इसलिए उनका भी कहना था कि महिलाओं को बाहरी काम से मुक्त कर दिया जाना चाहिए। हाल ही में महिलाओं के लिए रोजगार को बुनियादी अधिकार का दर्जा दिए जाने की मांग पर नई दिल्ली में सितम्बर 1989 को 20,000 महिलाओं का भारी प्रदर्शन हुआ था। यद्यपि हम उपरोक्त विचार से सहमत नहीं हैं फिर भी यह सच है कि महिलाओं पर काम का दोहरा बोझ पड़ता है और उन्हें मदद करने वाला कोई भी शायद घर के पुरुष भी नहीं होते।

अब तो कुछ और भी समाचार हमें विभिन्न स्रोतों से प्राप्त हो रहे हैं। 19 मार्च 1989 की "दि वर्कर्स वेंगार्ड" पत्रिका के अंक में छपी एक लेख में कहा गया, "सामाजिक खर्चों में कटौती का सबसे गहरा प्रहार महिलाओं पर पड़ना तय है, इससे बच्चों के किंडरगार्टेन की खर्च और अकेली रह रही माताओं को दी जा रही सुविधाओं में भारी कटौती होगी।

"विमेंन एण्ड रिवोल्यूशन" में छपी एक अन्य रिपोर्ट में बताया गया कि हरएक शहर के विशाल एक फैक्टरी में रात्रिकालीन पालियां समाप्त कर दी गई है जिससे अधिकतर महिलाएं प्रभावित होंगी, सभी कोई यह जानते हैं कि पूर्वी जर्मनी में महिलाओं को अनेक सुविधाएं हासिल थी। समाजीकृत तथा योजनाबद्ध आर्थिक विकास के कारण औद्योगिक विकास अच्छा हुआ और कल्याणकारी सुविधाएं बेहतर थी। पत्रिका का कहना है "महिलाओं को पूर्वी जर्मनी की समाजवादी व्यवस्था के तहत" भारी सुविधायें मिल रही थी। उच्च शिक्षित, भारी कुशलता-प्राप्त ये महिलाएं। पूर्वी जर्मनी के मजदूर वर्ग का 90% हिस्सा है। उत्पादन का निजीकरण एवं सामाजिक कार्यक्रमों में कटौती के खिलाफ अगर एक वर्ग संघर्ष नहीं छेड़ा गया तो मुनाफे की पूँजीवादी हवस में जब बेरोजगारी बढ़ेगी और सामाजिक कार्यक्रमों में भारी कटौती होगी, कामगारों की फौज में से महिलाएं ही पहले निकाली जाएंगी। और अब इसका असर शुरू भी हो चुका है। महिलाओं को "किंडर, कुच्चे, किरचे" यानि कि बच्चे, रसोईघर और गिर्जाघर के दायरे में बांधे रखने की मुहिम जारी है। प० जर्मनी में स्कूली बच्चों के लिए भोजन आदि की व्यवस्था सरकार बंद कर दी है।

लगता है नई नीतियों के खिलाफ महिला व पुरुषों का संघर्ष शुरू हो चुका है। 'विमेंन एंड रिवोल्यूशन' के रिपोर्ट के अनुसार पिछले 13 फरवरी पूर्वी बर्लिन में 800 प्रदर्शनकारियों ने, जिसमें अधिकतर महिलाएं और बच्चे थे, महिला और बच्चों के लिए सामाजिक कल्याण-कारी कार्यक्रमों को खत्म किए जाने के विरोध में प्रदर्शन कर रहे थे। प० जर्मनी के महिला शिक्षकों ने भी प्रदर्शन में हिस्सा लिया। ड्रिसडेन में बच्चों के देखभाल केन्द्रों को बंद कर दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ।

पिछले छः महीने में जिन महिलाओं ने पूर्वी जर्मनी छोड़कर पश्चिम जर्मनी में आ बसे हैं वह यह जानकर हैरान रह गए कि उनके बच्चों के लिए कोई पलनाघर का प्रावधान प० जर्मनी में नहीं है।

वहां गए लोग अब इसलिए वापस लौट रहे हैं क्योंकि वहां न तो उनके लिए कोई रोजगार का अवसर है और

न ही आवास का। पूर्वी जर्मनी में स्थिति इससे बिल्कुल अलग है। प्रसव के बाद महिलाओं को एक साल का सवेतन छुट्टी मिलती है और उन्हें अपने रोजगार खोने का भी कोई खतरा नहीं—यह हमारे देश की महिलाएं सपने में भी सोच नहीं सकतीं। पूर्वी जर्मनी में महिलाएं ट्रक ड्राइवर, क्रेन ऑपरेटर शल्य चिकित्सक, न्यायाधीश हैं। फिर भी महिलाओं को घर का काम-काज भी संभालना होता है। इसलिए महिलाओं की ओर से 24 घंटे पलनाघर व्यवस्था की मांग उठाई गई है। चीन में हमने खुद 2 से 10-12 साल के बच्चों के लिए सुव्यवस्थित 24 घंटा पलनाघरों को देखा है। अधिकारियों का कहना है कि अभिभावकों को सुविधा देने के अलावा इन केन्द्रों की व्यवस्था का एक बहुत बड़ा लाभ यह है कि इस तरह एक साथ रह रहे और बड़े हो रहे बच्चे कभी स्वार्थी नहीं होंगे। साझा सुविधाएं और दोस्ती के पनपने से एक-दूसरे को मदद करने की इच्छा जागती है और इस तरह मानव मूल्यों का प्रसार होता है।

समाजवादी देशों में सामने आ रहे प्रदर्शन विरोध आदि से हमारी भारत की महिलाएं चिंतित हैं। हमने हमेशा समाजवादी व्यवस्था का मिसाल दिया है और केवल समाजवादी व्यवस्था में ही हमें ये सुविधाएं हासिल होना संभव है ऐसा माना है। इसलिए सोवियत संघ या पूर्वी योरोप के घटना विकास से हम चिंतित जरूर हैं पर महिलाओं के उत्थान और मुक्ति के संदर्भ में समाजवाद एवं उसके मूलभूत सिद्धांतों के प्रति आस्था हमारा अटल है। मार्क्स व एंगेल्स का कहना कि किसी समाज का विकास एवं प्रगति उस समाज के महिलाओं की विकास के आधार पर ही आंका जा सकता है, आज भी सही है। लेनिन द्वारा स्थापित विश्व का पहला समाजवादी देश रूस में सबसे पहला एलान अन्यों में महिलाओं को समान अधिकार का था। यह तमाम शिक्षा हमारे लिए भारी मूल्यवान है और इन्हीं सिद्धांतों और आदर्शों को लेकर हम अपना संघर्ष को आगे बढ़ाते रहेंगे एवं सोवियत संघ, जनवादी जर्मनी एवं अन्य समाजवादी देशों में अपने उपलब्धियों को बरकरार रखने के संघर्ष में शामिल हमारी बहनों की मदद करेंगे। क्योंकि 1917 की महान अक्तूबर क्रांति एवं फांसीवादी हिटलर व मुसोलिनि के खिलाफ महान् युद्ध में इन देशों की वीरांगना महिलाओं की भूमिका को हम भूल नहीं सकते। हमें विश्वास है कि इस कठिन और नाजुक घरी में वहां की महिलाएं अपनी मर्यादा, अपने अधिकारों की रक्षा में कामयाब होंगे। मार्क्सवाद-लेनिनवाद में हमारा यह विश्वास ही हमें एहसास दिलाता है कि हमारे देश की महिलाएं अपनी मुक्ति के लिए दृढ़ता से उन सिद्धांतों पर संघर्ष कर जीत हासिल करेंगी। हम सोवियत संघ व पूर्वी योरोप की हमारी बहनों को उनके न्याय के लिए संघर्ष में अपनी सम्पूर्ण समर्थन जारी रखेंगे।

सरकार आखिर कब तक सामन्ती दृष्टिकोण से चिपकी रहेगी

☐ सरला महेश्वरी

[हम यहां का० सरला महेश्वरी (सांसद) की भाषण का संक्षिप्त सार पेश कर रहे हैं।—संपादक]

सन् 1974 में हमारे देश ने राष्ट्रीय बाल नीति अपनायी थी और इस नीति में बच्चों को राष्ट्र का सबसे महत्वपूर्ण निधि माना गया था।

समेकित बाल विकास योजना में आंगनवाड़ियों की ही मूलभूत भूमिका है। ये परियोजनाएं एक ओर जहां बच्चों, गर्भवती तथा शिशुवती महिलाओं के स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है वहीं उनका दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि इन योजनाओं के अन्तर्गत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं तथा सहायकों के रूप में हमारे बिल्कुल गरीब तबकों से आनेवाली महिलाओं के लिए रोजगार का भी एक अवसर पैदा हुआ है।

आंगनवाड़ी परियोजनाओं के महत्व को गरीब मेहनतकश परिवारों की महिलाओं को समाजोन्मुखी रोजगार मुहैया करने वाली महत्वपूर्ण परियोजनाओं के रूप में भी देखा जाना चाहिए। किन्तु हमारे लिए सबसे दुख और क्षोभ की बात यह है कि केन्द्रीय सरकार इन परियोजनाओं के इस पहलू की ओर पूरी तरह से निष्क्रिय है।

इन आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को आज भी मासिक सिर्फ 300 रुपये तथा सहायकों को केवल 110 रुपये ही दिये जाते हैं इसके अलावा उन्होंने अन्य कोई सुरक्षा और सुविधा प्राप्त नहीं है।

हमें इसलिए और भी दुख होता है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने 8 महीने से अधिक अवधि बीतने को हुई लेकिन इस दिशा में कोई नई पहलकदमी नहीं की है। यही पुराना ढर्रा आज भी चला आ रहा है।

सरकार यदि वास्तव अर्थों में गरीब जनता और खासकर कामकाजी महिलाओं के प्रति हमदर्दी रखती है तो उसे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायकों की न्यूनतम प्रमुख मांगों को तत्काल स्वीकार लेना चाहिए। प्रत्येक आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता को कम से कम 600 रुपये तथा सहायक को 400 रुपये मासिक तत्काल शुरू कर कर देना चाहिए। उसके अलावा इन महिलाओं को शैक्षणिक योग्यता तथा अनुभव के आधार पर इनकी पदोन्नति के द्वार भी खोले जाने चाहिएं।

का० बी० टी० आर० हमारे बीच हैं

□ रमणिका गुप्ता

"का० बी. टी. आर. नहीं रहे" एक खबर आई—एक बड़ा सा शून्य उठ कर मुझे घेरने लगा। फिर स्मृतियों के कगूरों पर घटनाएँ कौंधी, अनेकों-अनेक आन्दोलनों के हजूम, सैकड़ों-सैकड़ों नारों की तर्क-सम्मत, गगन-भेदी, व्यवस्था-भंजक, अनुगूंज, संगठनों की गुंथी-गुंथी श्रृंखलाएं, विचारों के लक्ष्य-बद्ध हो कर चलते-से लय की तारों से चमत्कृत हो-हो कर उत्तर देने लगे—

"बी. टी. आर. अमर हैं—बी. टी. आर. अमर हैं।" शून्य डोलने लगा था।

बी. टी. आर. सच्चे कम्यूनिस्ट थे। कम्यूनिस्ट कभी थकता नहीं-हारता नहीं-मरता नहीं। वह हमेशा प्रयास-रत रहता है, कार्यरत रहता है और संकल्पों की एक विरासत से लैस रहता है जिसे वह अगली पीढ़ी के लिए छोड़ जाता है। इसलिए वह एक विचार है जो मरता नहीं। और इसी लिए बी. टी. आर. कभी मर नहीं सकते!

मैं 1985 में लौट गई, जब मैं अप्रत्यक्ष रूप से सी. आई. टी. यू. और सी. पी. एम. से जुड़ी थी। 1985 में हम सी. सी. एल. के सिंगरौली की जयन्त कोलियरी में आंदोलन कर रहे थे, ठेकेदारी मजदूरों को नियमित करने का। 155 साथी गिरफ्तार थे। जो उन्हें जमानत कराने जाता उसे भी पुलिस यातना देती और कोई केस लाद कर जेल भेज देती। पुलिस ने मुझे गिरफ्तार करने के लिए जगह-जगह चौकियाँ बना कर महिला पुलिस बिठा रखी थी। पकड़े जाने पर मेरा मारा जाना भी निश्चित था। मैं मध्य प्रदेश से सटे उत्तर प्रदेश की सीमा में स्थित शक्ति नगर में एक का० के घर में रह कर मजदूरों की जमानत कराने और आन्दोलन को बिखरने से रोकने की जद्दो-जहद कर रही थी। मध्य प्रदेश में मैं भूमिगत हो कर कार्य करती थी। मैंने दिल्ली में का० बी. टी. आर. से भेंट कर सारी स्थिति उन्हें बता दी थी। उन्होंने तुरन्त निर्देश दिया—"रमणिका गिरफ्तारी मत देना। वह तुम्हें टार्चर करेंगे। तुम्हारे साथ पार्लियामेंट के दो सदस्य जाएंगे। तुम आम सभा में उन लोगों के साथ जाओगी। देखते हैं वह कैसे लोकसभा सदस्यों को पकड़ते हैं? तब तक बच कर रहो। आन्दोलन को जिन्दा रखो!"

यह सुन कर मैं स्तब्ध रह गई। आन्दोलन की रणनीति की हर बारीकी को समझ कर, एक शीर्ष नेता, अपने-अपने मोर्चे पर लड़ रहे हर कार्यकर्त्ता की सुरक्षा की कितनी चिन्ता करता है, यह मैंने उस दिन देखा। बड़ा सुखद लगा। जिस बुर्जुआजी संगठन से मैं आई थी वहां ऐसी चिन्ता नाम की कोई चीज नहीं थी भले अखबारों की सुर्खियों की चिन्ता हो।

केदला कोलयरी में आमसभा। महिलाओं की भारी भीड़। का० बी. टी. आर. कह रहे थे—

"महिलाएं आन्दोलन को अंजाम दे सकती हैं—उड़ीसा में मशीनें लाकर औरतों की छटनी की जा रही थी, लेकिन सब महिला-मजदूर अड़ गई, मशीनों के आगे सो गई। जब तक मशीनें लौटी नहीं तब तक हटी नहीं। यह शक्ति है आप में। वह अपनी नौकरी बचाकर ही हटी।"

उभर आया सी. आई. टी. यू. बम्बई-सम्मेलन 1987 को महिलाओं के प्रति उनकी संवेदन-शीलता, संगठन में महिलाओं की भागीदारी के प्रति उनका आग्रह, संगठन में अधिकांश पुरुष-नेतृत्व को महिलाओं के प्रति उदासीन और उपेक्षा भरे दृष्टिकोण का मुखर प्रतिवाद करने में उनका दूसरा सानी न था। इसलिए सी. आई. टी. यू. के बम्बई सम्मेलन में एक पूरा सत्र ही महिलाओं के लिए रख दिया था उन्होंने। उनकी प्रेरणा से भारी संख्या में महिलाओं की शिरकत भी हुई थी उस सम्मेलन में। महिलाओं के कार्यक्रम को हाईलाइट करने के लिए टी. वी. और कैमरा-मैनों की फ्लैश लाइट पूरे सत्र को लशकाती रही थी। उन्होंने अपने भाषण में पुरुषों के पुरुषवादी संस्कारों को, जो महिला-विरोधी होते हैं, काफी कुरेदा था। मुझे याद आ रहा है जब उस दिन मुझे बिहार की तरफ से बोलने के लिए कहा गया और उसका अनुवाद भी अंग्रेजी में डा० पंधे से कराया गया। अनुवाद के तुरन्त बाद उन्होंने अध्यक्षीय टिप्पणी में कहा—

"रमणिका का भाषण बहुत जोशीला था, पर अंग्रेजी

अनुवाद वैसा जोशीला नहीं किया गया।" मुझे आश्चर्य हुआ कि कैसे बी. टी. आर. महिलाओं की तनिक सी उपेक्षा को भी नोट करते थे और अपने नेतृत्व वर्ग का ध्यान खींचते थे।

मेरे भाषण पर उन्होंने कहा—

"मैं सोचता था रमणिका पूरा वार करेगी, पर इसने बिहार के नेतृत्व को बचा लिया और एक बैलन्सड मध्य मार्ग अपनाया है।" यानि वह संगठन स्तर पर बिहार में हो रही महिलाओं की उपेक्षा से वाकिफ थे और वह इस टिप्पणी के माध्यम से सब कह भी गये।

यादों की किरण यकायक कौन्ध गई। कोठागुड़म में अखिल भारतीय कोल वर्कर्स फेडरेशन के सम्मेलन का मंच, ठसाठस भरा पंडाल आ खड़ा हुआ मेरे समक्ष। मंच पर ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के लन्दन से आए स्टीफन फाकनर का अंग्रेजी का भाषण मैं लाइन व लाइन साथ साथ अनुवाद कर रही थी। का० बी. टी. आर. के समक्ष मुझे अनुवाद का अवसर मिलना, एक अत्यन्त ही उत्साह वर्धक बात थी मेरे लिए। भाषण समाप्त होते ही पीछे से बी. टी. आर. ने कहा—

"वैल डन रमणिका, वैल डन" फिर मुझे पास बुला कर कहा—

"बहुत सजीव और सटीक अनुवाद किया।" मैं अपनी उस खुशी का अन्दाज नहीं लगा पा रही थी उनके इन शब्दों ने मेरे भीतर सोये एक अनुवादक को जन्म दे दिया।

मैं उन दिनों हृदय रोग से पीड़ित थी। बाय-पास सर्जरी की बात चल रही थी। और मैं हर समय मौत के साये से घिरी रहती थी। उस दिन जीने की इच्छा ने मौत के साये को तोड़ा। का० बी. टी. आर. कार्यकर्त्ताओं के प्रेरणा स्रोत थे। उनसे बात करने पर या उनकी बातें सुन कर एक नया हौसला, एक असीम उत्साह भर जाता था पूरी जमात में, कुछ कर गुजरने का। वह पूरे मजदूर संगठन में जहाँ साहस भरते थे वहां उनकी गल्तियों का अहसास भी बखूबी, बिना मानसिक क्लेश पहुंचाए, अथवा बिना जलील करने का नजरिया अपनाए, करवा देते थे। वह अपनी गलत समझदारी को भी मजदूरों के बीच कबूल करने और सुधारने में हिचकते न थे। इन्टैरिम-रिलीफ को लेकर कोयला क्षेत्र के पीस-रेटिड व कैटेगरी I मजदूरों में काफी प्रतिक्रिया हुई। हम लोग जो उनमें काम करते थे नेतृत्व को यह जानकारी बराबर देते जा रहे थे। लेकिन जो दूसरे कैटेगरी तथा ग्रेड के बीच के नेतृत्वकारी साथी थे वह इस रिलीफ से खुश थे। काफी गरम बहस भीतर ही भीतर जारी थी। पीस-रेटिड मजदूर इस बात से खफा थे कि एक्सेवेशन व माइनिंग तथा स्टाफ के जो कामगार जो आन्दोलन में सबसे पीछे रहते थे या नहीं आते थे, संघर्ष के लाभ का बड़ा हिस्सा पा जाते थे, जबकि आन्दोलन नीचे की जमात ही करती थी। इन्टैरिम रिलीफ में भी यही हुआ था और पीसरेटिड मजदूर सब से अधिक घाटे में रहे थे। हर प्रतिनिधि ने अपने अपने विचार व्यक्त किए। का० बी. टी. आर. ने वहीं पर स्पष्ट कहा कि वह इन्टैरिम रिलीफ पर अपने दृष्टिकोण में सुधार करेंगे, उन्हें सही जानकारी नहीं थी मजदूरों की भावनाओं की, चूंकि उस तबके के मजदूर नेतृत्व वर्ग में या कैडर में कम थे।

एक बार फिर सिकुड़न हुई उस शून्य में। मैंने अपने को दिल्ली सी. आई. टी. यू. के केन्द्रीय कार्यालय में पाया। मेरी बीमारी काफी बढ़ती जा रही थी। मैंने अपनी "विल" लिख कर पार्टी को दे दी थी। आप्रेशन की तिथि निश्चित हो गई थी। मैं मरने का विश्वास लिए आप्रेशन करवाने जा रही थी। जाने से पहले का० बी. टी. आर. से भेंट नहीं हो सकी थी। एस्कार्ट अस्पताल दिल्ली में भर्ती थी। बाहर से लौटते ही उन्होंने मेरे बारे में पूछा और विमला दीदी को दो दो बार मेरे पास मिलने भेजा। सी. आई. टी. यू. कार्यालय से लोग मिलने आये। मेरे लिए खून की दरकार थी। सी. आई. टी. यू. के कार्यालय से उसका इन्तजाम करवाया। वह बराबर मेरी सेहत के बारे में पूछ-ताछ करते थे। उन जैसे नेता की अपने कार्यकर्त्ताओं के प्रति यह चिन्ता, यह खोज-खबर रखने की प्रवृत्ति हमारे जैसे फील्ड में जूझ रहे कार्यकर्त्ताओं में लगन तथा उत्साह और हिम्मत का अनवरत स्रोत थी, और इससे संघर्ष में जूझने की तमन्ना बलवती होती थी।

आपरेशन के बाद जब मैं लौटी तो उन्होंने पूछा—

"अब तुम क्या करोगी? आराम करो!"

मैंने विमला दीदी की तरफ देखते हुए कहा—"अब तो फिर जंगे मैदान में जाना है।"

वह हंस कर बोले—

"अब विचार करो, बैठ कर अध्ययन करो कुछ लिखो।" वह मेरी सेहत को देखते हुए कह रहे थे। मैं

चुप रही तो बोले—खैर सेहत का भी ख्याल रखो। "विमला दीदी बोली—"हम लोग बिना मजदूर जमात के नहीं रह सकते।"

मैं उस शून्य के किनारे किनारे चलने लगी। बम्बई में बी. टी. आर. का मकान में आप्रेशन के बाद मैं मिलने गई थी। "लाल सलाम" का जवाब का० ने हाथ उठा कर दिया। मेरे "कैसे हैं कामरेड आप" का जवाब उन्होंने हौले से "ठीक है" कह कर दिया। उन्हें ज्यादा बोलना मना है, विमल दी ने बता दिया था। आप्रेशन हुआ था। विमला दीदी कामरेड बी. टी. आर. की तरफ से सवाल पूछ रहीं थी। मैं जवाब दे रही थी, का० बी. टी. आर. सुन रहे थे।

मैं मन और दिमाग पर उनकी बिमारी से सम्बन्धित अनेकों प्रश्नों का बोझ लादे दिल्ली लौटी। का० बी. टी. आर. भले शरीर से बीमार थे—पर मन उनका हमेशा स्वस्थ रहा। मन से न वह कभी थके, न हारे, न अस्वस्थ हुए। उनकी सोच, उनकी दृष्टि, समग्र कैडर को दिशा देती रही। जरा सा स्वस्थ होने पर वह पुनः आफिस में आ बैठते, फिर टूर पर निकल जाते।

दिल्ली 18 मार्च। शून्य अब खण्ड-खण्ड हो गया था। मैं और का० नन्द किशोर उनके आवास पर उनसे मिलने गए। विमला दीदी थीं। उन्होंने बताया कि उनसे बात पूछना मना है। पर अपनी बात हम उन्हें सुना सकते थे। इस बार लाल सलाम का जवाब उन्होंने आखें झुका कर दिया। फिर विमला दीदी की तरफ देखा। वह आराम कुर्सी पर अधलेटे बैठे थे। विमला दीदी ने चुनाव के बारे में पूछा। मैंने बताया मैं हार तो बुरी तरह गई पर साम्प्रदायिकता के खिलाफ जोरदार मुहिम चलाने में हम कामयाब रहे। नये पहचान-सूत्र इकट्ठे कर पाये हैं—अब पार्टी का फैलाव करने की सम्भावनाएं बढ़ी हैं। मैंने देखा उनके यहां पर सन्तोष की एक लहर दौड़ गई। आखों में चमक आई पर तत्क्षण पीड़ा से उनका चेहरा पीला पड़ता नजर आया। विमला दीदी हमें बाहर ले आई। लग रहा था एक युग जूझ रहा है—जिन्दगी का युग—मौत के खिलाफ। यह जूझता हुआ युग अपनी छाप छोड़ता चला जा रहा है—छाप—जो अमिट है—एक सच्चे कम्यूनिस्ट की छाप, जो असाधारण व्यक्तित्व समेटे हो कर भी साधारण से कार्यकर्त्ताओं से घुल-मिल जाता था। जुझारू नेता की छाप—एक पार्टी के विचारक की छाप—जो कितने दस्तावेज तैयार कर गया आगे आने वाली पीढ़ी को राह दिखाने के लिए, जो अन्तिम दिनों में बेरोजगारों की जमात के लिए "काम के अधिकार" का दस्तावेज दर्द से करवटें बदलते-बदलते तैयार करता रहा, जो अपने लिए, अपने आराम के लिए समय नहीं बचा पाया पर संगठन के लिए जिन्दगी का पल-पल दे गया।

विमला दीदी ने बताया—

"अगले दिन उदय आयेगा डाक्टर भी बम्बई से आ रहे हैं। इन्जेक्शन लग रहा है जो बहुत ही पीड़ा देने वाला है। असल में चुनाव प्रचार में बी. टी. आर. चले गए थे उसके बाद ही तबियत ज्यादा बिगड़ गई फिर से।"

इतनी पीड़ा होते हुए भी मैंने पीड़ा की शिकन उनके चेहरे पर नहीं देखी। देखी एक दृष्टि-सुदृढ़-सबल, जो कहीं भी भ्रमित न थी। एक दम स्पष्ट-साफ। देखी एक तर्क-सम्मत विचार-श्रृंखला, जो पार्टी लाइन और कार्यक्रम को रेखांकित करती थी। देखा अनुभवों का एक भंडार जो संगठन की रीढ़ था। देखा अदम्य उत्साह का विराट रूप, जो कार्यकर्त्ताओं का प्रेरणा स्रोत था। देखा एक अतीत जो कठिन, दुःखद, कष्टदायक परिस्थितियों से जूझता, दुःसाहसिक, सुसंगठित, और प्रतिबद्ध था। देखा एक वर्तमान जो बढ़ रहा था, फैल रहा था। चतुर्दिक एक व्यापक दृष्टिकोण लेकर—एक कान्फेड्रेशन का विराट रूप जो सब मजदूरों संगठनों को समेट क्रान्ति का रूप लेगा, परिवर्तन का रास्ता बनाएगा, देखा भारत बन्धों का कतारबद्ध परिणाम-पुंज-दिल्ली की रैली में लाखों को आह्वान—एक ललकार दिल्ली पर अगली बार कब्जा करने की, और देखा एक भविष्य—जो बन रहा था—मजदूर जमात का। देश का राजनैतिक समीकरण का। उन आंखों में जो पीड़ा को नकार केवल देख रही थी परिवर्तन को।

मैं जान गई थी—संभवतः मौत नजदीक आ रही है। पर इच्छा शक्ति ने मौत को पछाड़ रखा है।

और आज खबर सुनी "का० बी. टी. आर. नहीं रहे।" असंख्य स्मृतियों के जुगनुओं की चमक ने उस शून्य को ध्वस्त कर दिया जिसने मुझे आ घेरा था। और मैं कह उठी—"हम होंगे कामयाब एक दिन।" उनकी दृष्टि, उनके विचार कभी मर नहीं सकते।

पुत्र का पत्र पिता के नाम

[हम यहां का० बी टी. आर. के पुत्र उदय द्वारा उनकी याद में लिखित एक आलेख, छाप रहे हैं—संपादक]

मेरे प्रियवर बाबा,

क्या आप वाकई हमें सदा के लिए छोड़ चुके हैं। मुझे विश्वास नहीं होता। मैं अभी भी, हर रविवार अंग्रेजी समाचार के बाद आपके फोन का इन्तजार करता हूं। लेकिन यह पिछले कई रविवारों से नहीं आया। धीरे-धीरे मैंने अहसास करना शुरू कर दिया है कि हो सकता है अब कभी न आए और मुझे भी अन्य लोगों की तरह मान लेना चाहिये कि मैं अनाथ हो गया हूं। अगाध प्यार और मित्रता के सुन्दर सम्बन्ध के पिछले 43 वर्ष सदा के लिए खो गए हैं। कभी न पलटने के लिए।

पीछे मुड़कर देखने पर लगता है जैसे मेरी जिन्दगी के 43 साल बहुत जल्दबाजी में बीत गए, हम साथ-साथ बहुत कम जिए। जब मैं बच्चा था, मुझे लगता कि आप लोगों के काम ने मुझे मेरे मां-बाप से वंचित कर दिया है, हलांकि अब यह मेरी राय नहीं है चूंकि मुझे पता है आप हमेशा से पार्टी के थे। फिर इतना जरूर कहूंगा कि बम्बई में अपनी व्यस्तताओं के बावजूद आप मेरे लिए वक्त निकाल लेते थे—मुझसे राजनीति पर बात करके, मेरे तमाम सवालों का जवाब देकर, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का ब्यौरेवार परीक्षण करके, लेनिन को उद्धृत करके, देर रात गए थक कर घर आने के बाद भी सारे ऐतिहासिक तथ्यों को बतलाकर...चाहे आप राज्य कमेटी की मीटिंग से आएं या किसी अध्ययन समूह की उबाऊ बहस से, या चाहे आपको सवेरे उठकर चार बजे वाली दिल्ली की उड़ान ही क्यों न पकड़नी पड़ी हो। इसके लिए मैं सदा आपका ऋणी रहूंगा। क्योंकि पार्टी में नहीं होने के बावजूद मुझे आपने मार्क्सवादी तरीके से सोचने का प्रशिक्षण दिया। यह तथ्य आपके महान व्यक्तित्व, आपके श्रेष्ठज्ञान और मार्क्सवाद में आपकी अडिग आस्था की जीत है। खासकर जब यह देखते हैं कि भारत चीन युद्ध के बाद भारतीय कम्युनिस्टों को गालियां दी जाती थीं, और हमें उनकी संतानों को कॉलेज में बेइज्जत किया जाता था, मुझे समझ में नहीं आता था कि मेरे पिता यह क्यों नहीं कहते कि चीन ने आक्रमण किया है। क्योंकि तब मुझे स्थिति का ज्ञान नहीं था और आप जेल जा चुके थे। प्रेस बेशक लोगों की भावनाओं से खेल रहा था और लोग उसका शिकार हो रहे थे। फिर भी मुझे दिल में पता था कि जब तक आप किसी बात के बारे में विश्वस्त न हों, उसका पूरा ज्ञान न रखते हों, तब तक आप कुछ बोल ही नहीं सकते। इस तथ्य की संपुष्टि हाल में भी हुई जब तथाकथित 'तिआनान्मन नरसंहार' के तुरन्त बाद, जब हाल ही आपका आपरेशन हुआ था और आप पूरी रिपोर्ट के इन्तजार में थे, आपने हमें बताया था कि यह एक 'प्रति-क्रांति' थी। बाद में सारी रिपोर्टों के आने पर पता चला कि यह कितना सच था—हालांकि उस समय मैं 'नरसंहार' की खबरें पढ़-पढ़कर काफी परेशान हुआ करता था।

आपके व्यक्तित्व की ये विशेषताएं...काम के लिए अदम्य उत्साह, विषय का गहरा ज्ञान, विश्लेषण क्षमता, —बहुत कम कहें तो डर पैदा करने वाली थीं। आपकी जिन्दगी महान त्याग, संपूर्ण आस्था और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सुलझी समझ की जिन्दगी थी। साम्राज्यवाद के खिलाफ इस तरह अथक तौर पर—आप पर और आपकी पार्टी पर इतने प्रहार, इतनी असफलताओं के बावजूद...लड़ते रहने की दृढ़ता और इच्छा शक्ति किसने दी आपको ? का० प्रकाश ने अपने लेख में आपके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का क्या सच्चा बयान किया है।

फिर भी कभी-कभी मुझे लगता है कि यदा-कदा आपको, खासकर आपके स्वास्थ्य के मामले में मेरी और मां की सुननी चाहिए थी। आप हमेशा जिद करते कि अपनी ऊर्जा, अपने वक्त का पूर्णतः दोहन किया जाए। आप दूसरों के शोषण के खिलाफ थे पर आपने खुद को पूरी तरह शोषित होने दिया। लेकिन मुझे वजह पता है। आपको मालूम था कि वक्त आपके हाथ से सरक रहा है

[शेष पृष्ठ 18 पर]

का० बी. टी. आर. हमेशा हमारे बीच रहेंगे

मधु सेठिया

का. बी. टी. आर. हमारे बीच नहीं रहे मगर मुझे हमेशा लगता है कि वह हैं और हमेशा रहेंगे क्योंकि उनके विचार उनके सुझाव और शिक्षा हर कठिन समय में हमारा पथ प्रदर्शन करती रहती है। का. बी. टी. आर. के निधन से पहले जब भी कोई समस्या उठ खड़ी होती थी मैं चाहती थी कि इस विषय में उनकी राय जाननी चाहिए परन्तु अब जब वह नहीं हैं उनके लेख, सम्मेलनों और मीटिंगों में कही गई उनकी बातें खुद-ब-खुद मुझे याद आ जाती हैं।

का. बी. टी. आर जैसे महान व्यक्तित्व के विषय में बहुत कुछ लिखा जा सकता है पर मुझे उनकी जिस बात ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया वह थी उनकी चीजों को बहुत जल्दी प्रारम्भिक स्थितियों में और बड़ी आसानी से समझ लेने की क्षमता। उनकी यह बात इतनी प्रखर थी कि कई बार उनकी लिखी और कही गई चीजें भविष्य वाणी जैसी प्रतीत होने लगती हैं। पर दरअसल उनकी यह क्षमता उनकी गहरी वैचारिक पैठ और संघर्षों के विशाल अनुभवों से मिलकर बनी थीं। समाजवादी देशों में आज जो उथल-पुथल है और इस उथल-पुथल के पीछे जो कारण हैं, उनके सम्बन्ध में मार्क्स शताब्दी सेमिनार में का. बी. टी. आर का लेख कई महत्त्वपूर्ण विचार बिंदु प्रस्तुत करता है।

का. बी. टी. आर केवल बड़े व महत्त्वपूर्ण विषयों को ही नहीं वरन संगठन के छोटे-छोटे सवालों को भी बड़ी गंभीरता से लेते थे तथा इन छोटी-छोटी कमियों के भयंकर भावी दुष्प्रभावों को तुरन्त पहचान लेते थे, 1981 में जब राजस्थान की पार्टी तथा सीटू को फूट परस्तों का मुकाबला करना पड़ रहा था उस दौर में का. बी. टी. आर जिला स्तर तक की मीटिंगों में हमारे साथ बैठे और कमियों को दूर करने में हमारी मदद की। राजस्थान जैसे पिछड़े प्रान्त में संगठन व आंदोलन के प्रति उनका यह सहयोग हमारा इरादा मजबूत कर देता था। हमें नया जोश व उत्साह देता रहता था। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़कर कार्य करते रहने की प्रेरणा देता रहता था।

हमारे पार्टी व सीटू सम्मेलनों के दौरान कभी कड़कड़ाती ठंड व कभी भयंकर गर्मी के बावजूद भी का. बी. टी. आर सुबह नौ बजे से रात को नौ बजे तक और हनुमानगढ़ सम्मेलन में तो रात के दो बजे तक अविचलित रहते हुए कुर्सी पर बैठे-बैठे प्रतिनिधियों की बहसें सुनते और हर बारीकी पर ध्यान देते थे। उनका असीम धैर्य और दृष्टि का पैनापन देखकर मैं कई अवसरों पर आश्चर्य में पड़ जाती थी। मेरे द्वारा किशनगढ़ सीटू सम्मेलन में कामकाजी महिलाओं की स्थिति पर एक प्रस्ताव पेश करते समय का. बी. टी. आर ने अपने छोटे से हस्तक्षेप द्वारा एक वाक्य की शब्द संरचना से सारतत्त्व पर पड़ने वाले प्रभाव पर जो कुछ कहा वह इस विषय पर मेरी सबसे महत्त्वपूर्ण क्लास ही बन गया। उनकी वह टिप्पणियाँ अविस्मरणीय हो गयीं। इस घटना के बाद मुझे लिखते व बोलते समय हर शब्द को परखने की आवश्यकता का अहसास होने लगा।

किशनगढ़ सीटू सम्मेलन में का. बी. टी. आर ने कहा कि 'दुनिया के मजदूरों एक हो' नारे का अर्थ पुरुष मजदूरों एक हो नहीं है और पूरा हाल ठहाकों से गूंज उठा। ऐसा था उनका दिल जीत लेने वाला तरीका। एक ऐसे सवाल पर जिस पर कई दिनों की गम्भीर बहस भी साथियों को राई रत्ती भर भी परिवर्तित नहीं कर सकती थी। मात्र चंद क्षणों में ही सही निर्णय पर पहुंचा दिया था।

उनका मस्तिष्क जीवन के आखिरी क्षणों तक भी पूरी तरह तरो ताजा था और किसी भी प्रकार के विचार और भावना को वह इतनी सहजता से समझ लेते थे कि मुझे कभी नहीं लगा कि वह उम्र में हमसे बहुत ज्यादा हैं, या पुराने जमाने के हैं। यही कारण था कि नौजवान कार्यकर्ता भी का. बी. टी. आर से उसी सहजता से अपनी

[शेष पृष्ठ 16 पर]

उत्तर प्रदेश में कान्वेंट स्कूल की ननों पर समाजविरोधी तत्वों का हमला

अपराधियों को कड़ी सजा दो

गजरौला, उत्तर प्रदेश के सेंट मैरी कान्वेंट स्कूल की चार ननों के एक प्रतिनिधिमंडल ने 24 जुलाई को दिल्ली में केंद्रीय गृहमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद से मुलाकात कर उन्हें 12-13 जुलाई की मध्य रात्रि में हुए हमले की जानकारी दी, जिसमें कान्वेंट में रह रही दो ननों के साथ बलात्कार किया गया था और लुटेरे कान्वेंट का रुपया पैसा भी उठा ले गये थे। सांसद एम ए बेबी और जनवादी महिला समिमि नेता सुशीला गोपालन तथा वृन्दा कारात इस प्रतिनिधिमंडल के साथ थीं।

प्रतिनिधिमंडल ने स्कूल की ननों की ओर से गृहमंत्री को ज्ञापन देकर उनसे अपराधियों को फौरन गिरफ्तार किये जाने की मांग की। उन्होंने गृहमंत्री को स्थानीय जनता का भी एक ज्ञापन दिया जिसमें ननों की मांग का समर्थन किया है और अपराधियों के खिलाफ फौरन कार्रवाई करने की मांग की गयी है।

गृहमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को बताया कि उन्होंने उस सुबह ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री से संपर्क किया था जिन्होंने राज्य के किसी मंत्री को तत्काल घटनास्थल पर भेजने का वचन दिया था। गृहमंत्री ने यह आश्वासन दिया कि ननों की सुरक्षा की पूरी व्यवस्था की जायगी जो बुरी तरह डरी हुई हैं। उन्होंने यह भी कहा कि अगर राज्य सरकार किसी कारण से सुरक्षा प्रदान नहीं करती है तो केंद्र सरकार सुरक्षा का पूरा इंतजाम करेगी। उन्होंने अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए सारे जरूरी कदम उठाये जाने का भी आश्वासन दिया। महिला समिति ने इस घटना के सिलसिले में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को भी ज्ञापन भेजा है।

इससे पहले, अखबार में छपी खबर पढ़कर महिला समिति का एक प्रतिनिधिमंडल जिसमें संगठन की अखिल भारतीय संयुक्त सचिव वृन्दा कारात शामिल थीं, सांसद एम ए बेबी तथा विजय राघवन के साथ 22 तारीख को गजरौला गया जहां सेंट मेरी कान्वेंट में घुसकर बदमाशों द्वारा दो ननों के साथ बलात्कार किये जाने की खबर आयी थी। घटनास्थल का दौरा करने के बाद, 23 तारीख की सुबह महिला समिति प्रतिनिधिमंडल ने, सांसद एम ए बेबी के साथ जाकर गृहमंत्री से मुलाकात की जिन्होंने फौरन उत्तर प्रदेश सरकार से संपर्क कर, उससे कदम उठाने को कहने और ननों को सुरक्षा प्रदान करने का आश्वासन दिया। 23 तारीख को जनवादी महिला समिति ने घटनास्थल का दौरा करने गए प्रतिनिधिमंडल को मिली जानकारियों के आधार पर, घटना का ब्यौरा देते हुए निम्नलिखित बयान जारी किया :

अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति गजरौला के सेंट मैरी कान्वेंट में दो ननों के साथ बलात्कार और अन्य के साथ जोर-जबर्दस्ती के जघन्य अपराध पर स्तब्ध रह गयी है और इस अपराध की कड़े से कड़े शब्दों में निंदा करती है। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि अब तक पुलिस अपराधियों को पकड़ नहीं पायी है और राज्य सरकार ने किसी मंत्री तो दूर किसी वरिष्ठ अफसर तक को इसके लिए भेजने का कष्ट नहीं किया है कि घटनास्थल पर जाय, आतंकित ननों का हौसला बंधाये और पुलिस की कार्रवाई करना सुनिश्चित करे, यह इसलिए और भी जरूरी है कि अल्पसंख्यक समुदाय से जुड़ी ये ननें सुदूर केरल से आयी हुई हैं और स्थानीय आबादी का पूरा समर्थन हासिल होने के बावजूद वे बहुत असुरक्षित महसूस कर रही है। महिला समिति उत्तर प्रदेश सरकार से मांग करती है कि फौरन किसी वरिष्ठ मंत्री या अधिकारी को जिम्मेदारी देकर भेजे ताकि अपराधियों की गिरफ्तारी और ननों को सुरक्षा प्रदान करने जैसी कार्रवाइयां सुनिश्चित की जा सकें।

सांसदों तथा महिला समिति नेताओं के प्रतिनिधिमंडल ने गजरौला जाकर स्कूल की संस्थापिका सिस्टर सेसिलिया और उस काली रात को वहां उपस्थित प्रिंसिपल, सिस्टर फ्लोरिना से मुलाकात की। नौ साल पहले शुरू हुए इस स्कूल में दिन में कक्षाएं लगती है और लगभग 600 बच्चे पढ़ते है। स्कूल में नौ ननें, जिसमें ज्यादातर केरल से हैं और एक मेड सर्वेंट रह रही थीं। 12-13 की मध्यरात्रि में कोई 2 बजे, स्कूल के पिछवाड़े

की एक खिड़की में लगी जाली आदि उखाड़कर गुंडे अंदर घुस आये और उसके बाद उन्होंने डर से जड़ हो गयी ननों को एक एक कर उनके कमरों से घसीट कर बाहर निकालना शुरू कर दिया। ननों ने प्रतिनिधिमंडल को बताया कि वे डर के मारे काठ हो गयी थीं क्योंकि वे ऐसी भयावह स्थिति का सामना होने की तो कभी कल्पना भी नहीं कर सकती थीं उन्होंने यह भी बताया कि तीन लोग स्कूल में अन्दर घुसे थे। जिन्हें वे पहचान सकती है हालांकि हो सकता है कि उनके कुछ दूसरे साथी बाहर खड़े पहरा दे रहे हों।

स्कूल में घुसने के बाद इन गुंडों ने ननों को गालियां दीं और उनके साथ बदसलूकी की। इसके बाद उनमें से हरेक को अलग-अलग कमरों में अपनी-अपनी अलमारियां खोलने के लिए ले जाया गया। दो के साथ बलात्कार किया गया जो मेरठ में अस्पताल में भर्ती हैं। लुटेरे एक लाख रुपये नकद, जो कान्वेंट के थे और काफी कुछ मूल्यवान सामान भी उठा ले गये। रात को घटना के फौरन बाद भयभीत ननें बाहर नहीं निकल सकती थीं इसलिए, उन्हें पुलिस में रिपोर्ट लिखाने के लिए अगली सुबह तक का इन्तजार करना पड़ा। ननें अब तक धक्के से उबर नहीं पायी हैं और बहुत ही अरक्षित महसूस कर रही हैं। असुरक्षा की यह भावना इसलिए और भी बढ़ी है कि इस हमले के बाद से ही, कान्वेंट से थोड़े से ही फासले पर डकैती की दो घटनाएं और हो चुकी हैं। हालांकि, पुलिस ने सुरक्षा का वचन दिया था, प्रतिनिधिमंडल को कान्वेंट पहुंचने पर न पुलिस की कोई पिकेट दिखायी दी और न सुरक्षा का कोई दूसरा इन्तजाम ही दिखायी दिया।

प्रतिनिधिमंडल ने इलाके के पुलिस अफसर इन्चार्ज सुभाष काजला से भी मुलाकात की। उसका दावा था कि स्कूल के भीतर घुसे तीन मुजरिमों के साथ गये एक अपराधी को पुलिस गिरफ्तार भी कर चुकी है। उसने यह दावा भी किया कि तीनों अपराधियों को पहचाना जा चुका है और उन्हें जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। लेकिन, प्रतिनिधिमंडल यह जानकर स्तब्ध रह गया कि घटना के दस दिन बाद भी पुलिस अफसर इन्चार्ज को मैडीकल रिपोर्ट हासिल नहीं हुई थी। बार-बार पूछे जाने पर काजला ने कहा कि जरूरत से ज्यादा व्यस्त होने के कारण रिपोर्ट हासिल नहीं की जा सकी थी हालांकि बलात्कार की पुष्टि हो चुकी है। पुलिस अफसर ने यह भी स्वीकार किया कि पिछले अड़तालीस घंटे से कान्वेंट पर कोई पिकेट नहीं थी क्योंकि, "सारे उपलब्ध जवान अपराधियों को पकड़ने के काम पर लगे हुए थे।" पुलिस इन्चार्ज ने यह दावा भी किया कि इसी अपराध के कारण पी ए सी की एक पूरी प्लाटून इलाके में लायी जा चुकी है।

प्रतिनिधिमंडल ने देखा कि स्थानीय जनता पूरी तरह से ननों के साथ हैं। और लोगों ने कुछ एकजुटता कार्रवाईयां भी की हैं। फिर भी पुलिस की भूमिका को लेकर सारे ही लोग सशंक थे।

[पृष्ठ 15 का शेष]

थी कि देहाती गरीबों की बात कम से कम ध्यानपूर्वक सुनी तो गयी और कि उनकी मांगें सांसदों तक पहुंच गयीं।

भावी कार्रवाई

रैली के बाद तैयारी समिति ने भावी कार्रवाई पर विचार किया। तय हुआ कि जिन राज्यों में राज्य सम्मेलन नहीं हुए हैं, वहां अखिल भारतीय कान्फ्रेंस से पहले राज्य सम्मेलन आयोजित कर लिये जायं, अखिल भारतीय कान्फ्रेंस दिसंबर 1990 के आरंभ में होगी। दूसरा फैसला यह हुआ कि तमाम आंगनवाड़ी महिलाएं प्रधानमंत्री को पोस्टकार्ड भेजकर हैल्परों को 400 रु० और कर्मचारियों को 600 रु० वेतन देने की मांग करेंगी। इसके साथ ही, सेवाओं को नियमित किये जाने तथा प्रसूति अवकाश वगैरह की मांग भी की जायगी। अखिल भारतीय फेडरेशन की स्थापना कान्फ्रेंस 1-2 दिसंबर को होगी, जिसमें 500 डेलीगेट भाग लेंगी, कान्फ्रेंस का स्थान बाद में तय किया जायगा।

रैली के बाद देश भर से आयी आंगनवाड़ी महिलाएं उत्साह और आशाओं के साथ वापस लौटीं। वे इस आशा के साथ लौटी हैं कि कांग्रेस (आइ) उनकी जिन जायज मांगों को ठुकराती रही है, राष्ट्रीय मोर्चा सरकार उन्हें स्वीकार करेगी, क्योंकि इस सरकार को बनाने में उनका भी योगदान रहा है। लेकिन, इसके साथ ही वे इस निश्चय के साथ लौटी हैं कि जब तक उनकी मांगें स्वीकार नहीं हो जातीं, उनका संघर्ष जारी रहेगा।

रैली एवं इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए हम दिल्ली जनवादी महिला समिति, सीटू दिल्ली राज्य कमेटी एवं अन्यों को बधाई देते हैं।

संसद पर आंगनवाड़ी महिलाओं की ऐतिहासिक रैली

☆ विमल रणदिवे

गत 7 अगस्त को दिल्ली में आंगनवाड़ी कर्मचारियों की एक ऐतिहासिक रैली संपन्न हुई, रैली के प्रति आंगनवाड़ी की कर्मचारी महिलाओं का उत्साह इतना ज्यादा था कि कहां तो रैली के आयोजकों का अनुमान था कि ज्यादा से ज्यादा 2000 महिलाएं ही रैली में भाग लेने आ पायेंगी, लेकिन वास्तव में रैली में भाग लेने वाली महिलाओं की तादाद 6000 से भी ज्यादा हो गयी। देश के 14 राज्यों की नुमाइंदगी कर रही इन महिलाओं को रैली में आने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन, उन्होंने भी हार नहीं मानी। हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश की आंगनवाड़ी कर्मचारियों को तो बाकायदा धमकी दे दी गयी थी कि यदि उन्होंने रैली में शिरकत की, तो उन्हें नौकरी से भी हाथ धोने पड़ सकते हैं। धमकी देने वालों में आंगनवाड़ी के अधिकारी ही नहीं, बल्कि पुलिसवाले भी शामिल थे। कई जगह उनकी बसें रोकी गयीं, ताकि वे दिल्ली न पहुंच सकें। चित्तौड़ से आ रही महिलाओं को रेल के डिब्बे से उतार लिया गया। किंतु इस बाधा के बावजूद ये महिलाएं किसी तरह दिल्ली आ ही गयीं, हालांकि रेल से उतार लिये जाने के कारण उन्हें दिल्ली पहुंचने में कुछ विलंब अवश्य हो गया।

पुणे से आयी 50 महिलाएं औरों से अलग ही रहीं। वे 3 अगस्त को ही पुणे से रवाना हो गयीं और 4 अगस्त को दिल्ली आ पहुंचीं। उन्हें भी शक था कि कहीं उन्हें गाड़ी से उतार न दिया जाय। इसलिए, वे पूरी तैयारी से आयी थीं कि यदि उन्हें गाड़ी से उतार भी दिया गया, तो वे दूसरी गाड़ी पकड़कर रैली के दिन दिल्ली पहुंच जायेंगी। सौभाग्य से उन्हें रास्ते में गाड़ी से उतारा नहीं गया और वे दिल्ली पहुंच गयीं, बल्कि जिस दिन उनके पहुंचने की उम्मीद थी, उससे एक दिन पहले ही पहुंच गयीं। जाहिर है कि जब वे रात दो बजे दिल्ली पहुंचीं, तो स्टेशन पर उनकी अगवानी के लिए कोई नहीं था। इसके बाद वे स्वयं ही मंडी हाउस पहुंच गयीं और एक रात उन्होंने वहीं सेंट्रल लान पर बितायी। रैली के आयोजकों को अगली सुबह मालूम हुआ कि पुणे की महिलाओं का जत्था तो रात ही दिल्ली पहुंच चुका है। इसके बाद उन्हें फिरोजशाह कोटला स्थित कैंप में ले जाया गया। इस परेशानी के बावजूद इन महिलाओं ने जैसे अनुशासन का परिचय दिया उससे एक-एक वालंटियर का प्रभावित होना स्वाभाविक ही था। रात की कठिनाइयों के बावजूद कैंप की ओर जाते हुए वे पूरे उत्साह से नारे बुलंद करती रहीं। इनमें तीन महिलाएं ऐसी भी थीं, जो सितम्बर 1989 की रैली में भाग लेने के लिए अपने वेतन में एक कटौती भी झेल चुकी हैं। सितम्बर रैली के दौरान भी विभिन्न राज्यों की आंगनवाड़ी कर्मचारियों को ऐसी ही धमकियां दीं गयी थीं, लेकिन उनका निश्चय भी अडिग था। वे वेतन में कटौती के लिये तैयार थीं, किंतु संघर्ष छोड़ने के लिये तैयार नहीं थीं। इससे पता चलता है कि अपने काम के हालात के प्रति महिलाओं में कितना भारी रोष है और कि वे अपने जायज अधिकारों के लिये किस हद तक संघर्ष के लिये तैयार हैं। दमन की हर कार्रवाई के साथ उनकी संघर्ष भावना और मजबूत ही होती है। राजस्थान एक अन्य राज्य है, जहां कि ऐसी दमनात्मक कार्रवाई हुई है और पूर्व मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी के निर्वाचन क्षेत्र में हुई है।

रैली के आयोजनकर्ताओं का अनुमान था कि रैली में भाग लेने वाली महिलाओं की तादाद करीब 2000 होगी, इसलिये उन्हें ठहराने का इन्तजाम भी इसी आधार पर किया गया था। किंतु बाद में सारी योजना ही बदलनी पड़ी। विभिन्न राज्यों की डेलीगेटों को ठहराने की व्यवस्था 13 सामुदायिक भवनों में करनी पड़ी। अकेले पंजाब से ही 2000 महिलाएं दिल्ली आ पहुंची थीं। महाराष्ट्र से 1000 और राजस्थान से 15000 महिलाएं आयीं। इसलिये, 6000 से भी ज्यादा महिलाओं को ठहराने के लिए तमाम वैकल्पिक व्यवस्थाएं करनी पड़ीं।

अनुकरणीय अनुशासन

प्रदर्शनकारी महिलाओं का जुलूस दोपहर साढ़े बारह

बजे बोट क्लब पहुंचा। प्रदर्शन को नेतृत्व पंजाब से आयी महिलाओं का जत्था कर रहा था। उसके बाद राजस्थान और महाराष्ट्र के जत्थे थे। इसके बाद पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश की महिलाओं के जत्थे थे। हर जत्थे के पास अपने बैनर थे और छोटे झंडे भी वे स्वयं लेकर आये थे। महिलाओं का जुलूस, संगठन और अनुशासन का आदर्श उदाहरण था। वे स्वयं पंक्तिबद्ध होकर चल रही थीं। जुलूस को अनुशासित ढंग से आगे बढ़ने के लिए वालंटियरों की वास्तव में जरूरत ही नहीं थी।

रैली में भी यही भावना दिखायी दे रही थी। रैली स्थल पर पहुंचते ही प्रदर्शनकारी महिलाओं ने अत्यंत अनुशासित तरीके से अपना स्थान ग्रहण कर लिया। यद्यपि पानी के टैंकर ठीक समय पर नहीं पहुंच सके, फिर भी महिलाओं ने भीषण गर्मी में इस अभाव की कोई शिकायत नहीं की और न ही पानी के टैंकर आने पर पानी के लिए किसी प्रकार अफरा-तफरी मचायी। प्रदर्शनकारी महिलाओं ने रैली में बोलनेवाले वक्ताओं को जिस धैर्य से सुना, वह भी प्रशंसनीय था। इससे पता चलता है कि रैली से जुड़े मुद्दों से वे कितने गहरे जुड़ी हुई थीं।

जिन कैंपों में महिलाओं को ठहराया गया था, उनका माहौल भी इसी तरह गंभीर था। विभिन्न राज्यों से आयी महिलाएं एक-दूसरे से उनके राज्यों के बारे में जानकारियां प्राप्त कर रही थीं। विभिन्न राज्यों में हुए संघर्षों, उनमें हासिल जीत-हार के बारे में जानकारी हासिल कर रही थीं। जिस तरह से विभिन्न जत्थे ठीक समय पर मार्च के लिए तैयार हो गये, उस पर वालंटियरों को भी आश्चर्य होना स्वाभाविक था। सुबह साढ़े सात बजे तमाम महिलाएं मार्च के लिए तैयार थीं। हमेशा की तरह बच्चे उनके साथ थे।

दृढ़ निश्चय

रैली में भाग लेने आयी अधिकांश महिलाएं देहाती क्षेत्रों की थीं। वे गांवों के अत्यंत पिछड़े और शोषित तबकों से ताल्लुक रखनेवाली थीं। शहरी क्षेत्र की महिलाओं के साथ चलते हुए भी उन्हें अलग से पहचाना जा सकता था। इनमें से अनेक महिलाओं का उत्साह तो अपने चरम पर था। डूंगरपुर से आयी एक गर्भवती महिला जुलूस में चलने की जिद कर रही थी, जबकि उसकी स्थिति ऐसी थी कि उसे प्रसूति के लिए अस्पताल ले जाना पड़ा। उसने अपनी नवजात बेटी का नाम ही "रैली देवी" रख दिया।

पंजाब के रोपड़, होशियारपुर, अमृतसर जैसे आतंकवादपीड़ित क्षेत्रों से आयी महिलाओं ने जबर्दस्त निश्चय का परिचय दिया। बसों तथा रेलों से पूरी रात यात्रा करते हुए वे सुबह साढ़े सात बजे जुलूस में शामिल हो गयीं। वे ऐसे इलाके से आ रही थीं, जहां हर रोज तीस-चालीस हत्याएं हो जाती हैं। यह उनके दृढ़ निश्चय का ही सूचक है कि इन हालात के बावजूद वे दिल्ली आयीं। चंडीगढ़ और देहरादून का एक जत्था दोपहर दो बजे बोट क्लब पर ही पहुंचा, जिसका कि रैली में पहले से मौजूद जत्थों ने भारी स्वागत किया।

रैली, आंगनवाड़ी महिलाओं की दृढ़ एकजुटता का प्रमाण थी। जाहिर है कि यह तैयारी समिति के गठन के बाद पिछले एक साल के लगातार संघर्षों का ही नतीजा थी। तैयारी समिति ने अपनी 7 जून 1990 की बैठक में 10 जुलाई के दिन विभिन्न मांगें बुलंद करने और जगह-जगह धरनों, प्रदर्शनों, बैठकों के आयोजन का निश्चय किया था। अपनी प्रमुख मांगें बुलंद करने का यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा, जिसमें हजारों महिलाओं ने शिरकत की। इसके अलावा तैयारी समिति ने संसद पर प्रदर्शन का भी निश्चय किया, जो कि 7 अगस्त को संपन्न हुआ। इसी रोज संसद का मानसून सत्र आरंभ हो रहा था। 7 अगस्त की तारीख तय करते समय यह ध्यान नहीं रहा कि 6 अगस्त को रक्षाबंधन का त्यौहार पड़ रहा है। कुछ लोगों ने कहा भी कि 7 अगस्त की जगह रैली किसी और दिन आयोजित कर ली जाय, किंतु तमाम तैयारियां हो जाने के कारण तारीख बदलना संभव नहीं था। महिलाओं ने तैयारी समिति को पूरा सहयोग दिया। दरअसल, उनका संघर्ष एक बेहतर जीवन का संघर्ष है। वे उन जायज लाभों के लिए लड़ रही हैं, जिनसे पिछली कांग्रेसी सरकारें उन्हें वंचित रखती आयी हैं।

रैली की तैयारियां

आंध्र प्रदेश में 10 प्रोजेक्टों की 50 डेलीगेटों की कान्फ्रेंस हुई। कान्फ्रेंस ने दिल्ली रैली में भाग लेने के लिए 26 महिलाओं के प्रतिनिधि मंडल का चुनाव किया। तमिलनाडु में हरेक प्रोजेक्ट से धन एकत्रित किया गया

और यहां से 13 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल को दिल्ली भेजा गया। तमिलनाडु के प्रतिनिधिमंडल की ओर से बोलते हुए राजेश्वरी ने कहा कि हम सोचते थे कि डी एम के सरकार हमें कुछ लाभ पहुँचायेगी, लेकिन हमें हफ्ते में एक दिन का अवकाश तक नहीं मिला।

केरल के मालपुरम और कासरगोड से एक सुपरवाइजर के साथ 13 महिलाएं आयी थीं। इस प्रतिनिधिमंडल के लिए भी विभिन्न केंद्रों की महिलाओं ने धन एकत्रित किया था। केरल की डेलीगेट वल्लीकुट्टी ने बताया कि राज्य में वाम-जनतांत्रिक मोर्चा सरकार बनने के बाद आंगनवाड़ी महिलाओं को दो प्रसूतियों के लिए प्रसूति अवकाश मिलने लगा है। इन्हें मिलनेवाला मानदेय भी 300 रु० माहवार से बढ़ाकर 335 रु० कर दिया गया है और उन्हें त्यौहारों के मौके पर बोनस भी मिलने लगा है। इस पर अन्य राज्यों की महिलाओं को आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था। प० बंगाल की नीलिमा मोइत्रा ने बतलाया कि प० बंगाल में आंगनवाड़ी महिलाओं को छः-सात साल की सेवा के बाद सुपरवाइजर पद पर पदोन्नत करने की मांग मान ली गई है। वाम मोर्चा सरकार ने उन्हें और भी कई लाभ दिये हैं, जो अन्य राज्यों में हासिल नहीं हैं। राज्य में आंगनवाड़ी कर्मचारियों की सदस्यता 15,000 से ऊपर हो चुकी है।

दरअसल, प० बंगाल और केरल में आंगनवाड़ी कर्मचारियों को जो लाभ मिले हैं, उन्हीं से प्रेरित होकर अन्य राज्यों की महिलाओं ने भी संघर्ष की राह अपनायी है। पहले महिलाओं को इन लाभों के बारे में पता ही नहीं था, यहां तक कि केंद्र सरकार की ओर से जारी होने वाले सर्कुलर तक उन्हें नहीं दिखाये जाते थे। इधर उनकी संघर्ष क्षमता बढ़ी है। राजस्थान में तो उन्होंने अपनी राशि बढ़वाने में भी सफलता हासिल की है।

राज्यों के संघर्ष

पंजाब की सुरिंदर कौर ने बताया कि किस तरह तमाम केंद्रों पर संघर्ष चलाने के बाद उनकी सुपरवाइजर पद पर नियुक्ति की मांग मंजूर हुई। यह पद उन महिलाओं को दिया गया है, जो 7 या 8 साल सेवा कर चुकी हैं। इसके साथ ही उन्हें सरकारी कर्मचारियों के रूप में मान्यता भी मिल जाती है। केंद्र शासित प्रदेश में सरकारी कर्मचारियों के आन्दोलन के फलस्वरूप महिलाओं को 6 महीने प्रसूति अवकाश मिलने लगा और वह भी बिना किसी शर्त के। अब केंद्र सरकार के कार्यालयों की महिलाएं भी इस मांग के लिए संघर्ष चला रही हैं।

राजस्थान की पुष्पा शर्मा ने अपने राज्य के हालात का जिक्र किया। यहां महिलाओं को सी डी पी ओ पुलिस और अन्य अफसरों द्वारा उत्पन्न बाधाओं के खिलाफ लड़ना पड़ा। ये अफसर उन्हें दिल्ली आने से रोक रहे थे। इसके बावजूद राज्य से एक विशाल जत्था आया, जिस पर वहां की महिलाओं का गौरवान्वित होना स्वाभाविक था। पुष्पा शर्मा ने बताया कि किस तरह पहले वहां आंगनवाड़ी कर्मचारियों को परिवार नियोजन के केस लाने पर मजबूर किया जाता था और ऐसा न कर पाने वाले के सिर पर बर्खास्तगी की तलवार लटकती रहती थी। किन्तु महिलाओं के संघर्ष के चलते अब यह स्थिति नहीं रही। मगर कुछ राज्यों में यही स्थिति मौजूद है।

हरियाणा की सीता देवी ने बताया कि यहां आंगनवाड़ी महिलाओं को दिन में सात-आठ घंटे काम करना पड़ता है और इसके बदले उन्हें केवल 110 रु० माहवार मिलते हैं। उन्होंने पूछा कि यह कहां का न्याय है? सीता देवी ने बताया कि राज्य की आंगनवाड़ी महिलाओं को धमकी दी गयी कि यदि वे दिल्ली गयीं तो उन्हें काम से हटा दिया जायगा। आज भी हमारी राह में बाधाएं खड़ी की गयीं, जगह-जगह नाकेबंदी कर दी गयी। फिर भी हमने हिम्मत नहीं छोड़ी और हम यहां आ पहुंची। हमारी सफलता हमारी एकता पर निर्भर करती है और हम अपनी मांगें हासिल करके रहेंगी। महाराष्ट्र की श्रीमती मालुसरे ने भी कठिन संघर्ष की जरूरत रेखांकित की और कहा कि संघर्ष के बल पर ही मांगें हासिल की जा सकती हैं। उन्होंने बताया कि आज भी आंगनवाड़ी महिलाओं से रिश्वत ऐंठी जा रही है।

सांसदों का समर्थन

आंगनवाड़ी कर्मचारियों को संबोधित करते हुए सी पी आइ (एम) सांसद मालिनी भट्टाचार्य ने महिलाओं को नाम मात्र वेतन देने के लिए सरकार की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि यह प्रश्न केवल आंगनवाड़ी महिलाओं का नहीं, बल्कि यह मुद्दा तमाम महिलाओं की आम मांगों से जुड़ा हुआ है। यह संघर्ष भी आम जनवादी संघर्ष का अभिन्न हिस्सा है। इसलिए आम आंदोलन के तहत

भी इस मुद्दे को उठाया जाना चाहिए। उन्होंने वादा किया कि वह संसद में इस मामले को उठायेंगी।

सी पी आइ (एम) सांसद सरला माहेश्वरी ने रैली को सफल बनाने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से आयी महिलाओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि जो सरकार महिलाओं का सम्मान नहीं करती, वह ज्यादा दिन नहीं रह सकती। आज हर जगह महिलाओं का दर्जा घटाया जा रहा है। उनके रोजगार के अवसर कम हो रहे हैं और उनके लोकतांत्रिक अधिकारों में कतरब्योंत की जा रही है। उन्होंने कहा कि लोगों ने राजीव गांधी की सरकार को सत्ता से हटा दिया, क्योंकि वह लोगों की जायज माँगें पूरी नहीं कर सकी। आज भी महंगाई लगातार बढ़ रही है, महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं बढ़ रही हैं। आंगनवाड़ी महिलाओं को नाम मात्र का वेतन मिल रहा है। सरला महेश्वरी ने भी आंगनवाड़ी महिलाओं के मुद्दे को राज्यसभा में उठाने और उनके संघर्ष के साथ रहने का वादा किया।

रैली को सम्बोधित करते हुए सीटू सचिव रंजीत बसु ने हजारों की तादाद में शिरकती के लिए महिलाओं का अभिवादन किया। सुश्री बृन्दा कारात ने भी रैली को सम्बोधित किया।

रैली को एटक और एच एम एस के प्रतिनिधियों ने भी संबोधित किया। एटक की सकीना हैदर ने महिलाओं को बधाई देते हुए और व्यापक एकता कायम करने की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री वी० पी० सिंह को आंगनवाड़ी महिलाओं की मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए। एच एम एस की श्रीमती इंदिरा सक्सेना ने कहा कि साझा मांगों को हासिल करने के लिए संघर्ष और एकता की लाइन पर दृढ़ता से चलते रहना होगा। उन्होंने आशा प्रकट की कि महिला आयोग आंगनवाड़ी महिलाओं की मांगों के सिलसिले में सकारात्मक कदम उठायेगा।

तैयारी समिति की संयोजक विमल रणदिवे ने विभिन्न राज्यों में काम के हालात पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस साल एक फेडरेशन गठित करने का भी फैसला किया गया है। उन्होंने महिलाओं को बधाई देते हुए कहा कि आज की रैली में जिस तरह आशा से ज्यादा महिलाओं ने भाग लिया, उससे हमारे भावी संघर्ष निश्चित रूप से प्रभावित होंगे।

रैली की अध्यक्ष अहिल्या रांगणेकर ने अपने प्रेरक भाषण में कहा कि पिछली सरकार कहा करती थी कि उसके पास इन महिलाओं को देने के लिए कोई पैसा नहीं है। उन्होंने कहा कि सीटू हमेशा इन महिलाओं की मदद करती रही है। यदि सरकार ने उनकी मांगें नहीं मानीं तो महिलाएं एक दिन काम बंद कर देंगी। रैली को संबोधित करते हुए विभिन्न राज्यों की प्रतिनिधियों ने अपने राज्यों की स्थिति पर प्रकाश डाला।

प्रधानमंत्री से भेंट

इस दौरान रैली में आयी महिलाओं की ओर से एक 6 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने संसद भवन जाकर प्रधानमंत्री से भेंट की। सीटू महासचिव समर मुखर्जी के नेतृत्व वाले इस प्रतिनिधिमंडल में सांसद सुभाषिणी अली, सांसद सरला माहेश्वरी और सीटू सचिव रंजीत बसु भी शामिल थे।

प्रधानमंत्री को ज्ञापन देते हुए विमल रणदिवे ने आंगनवाड़ी महिलाओं की सेवाओं को नियमित करने तथा उनके मानदेय में बढ़ोतरी करने की जरूरत पर जोर दिया। इस पर प्रधानमंत्री ने आश्चर्य प्रकट किया कि उनके मानदेय में अभी तक बढ़ोतरी क्यों नहीं हुई, जबकि यह सवाल लोकसभा में पहले ही आ चुका है। उन्होंने कहा कि मानदेय बढ़ाने के बारे में वह वित्त मंत्री से बात करेंगे और यह भी सुनिश्चित करने की कोशिश करेंगे कि किसी भी आंगनवाड़ी केन्द्र को बंद न किया जाय।

प्रतिनिधिमंडल ने प्रधानमंत्री को बताया कि जब भी ये महिलाएं किसी मीटिंग वगैरह में भाग लेती हैं तो उनका वतन काट लिया जाता है। इस सिलसिले में महाराष्ट्र सरकार द्वारा जारी एक आदेश की फोटो प्रति भी अहिल्या रांगणेकर ने प्रधानमंत्री को दी। मधु सेठिया ने राजस्थान में महिलाओं पर दमन का मुद्दा उठाया। सुरिंदर कौर ने कहा कि आंगनवाड़ी महिलाओं की समस्या हल करने से सरकार पर कोई भारी बोझ नहीं पड़ने जा रहा।

प्रधानमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को धैर्यपूर्वक सुना। अंत में उनसे पूछा गया कि हम बोट क्लब पर एकत्रित महिलाओं को क्या बतायें, तो उन्होंने कहा कि यहां जो भी मुद्दे उठाये गये हैं, वह उन सब पर विचार करेंगे।

बोट क्लब लौटकर प्रतिनिधिमंडल ने रैली को प्रधानमंत्री से हुई बातचीत की रिपोर्ट दी। महिलाओं को खुशी

[शेष पृष्ठ 11 पर]

दुर्गापुर में कामकाजी महिला सम्मेलन

स्टील वर्कर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, दुर्गापुर शाखा कामकाजी महिलाओं का दूसरा सम्मेलन 15 जून 1990 को सम्पन्न हुआ। का० शांति चटर्जी, चंदना सैन गुप्ता शेफाली बसाक व संध्या मंडल को लेकर गठित अध्यक्ष-मंडली ने सम्मेलन का संचालन किया।

इस अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए अखिल भारतीय कामकाजी महिला समन्वय समिति के सचिव का० विमल रणदिवे ने देश की वर्तमान आर्थिक व सामाजिक स्थिति का खुलासा किया और इससे निपटने के लिए मजदूरवर्ग और खासकर महिलाओं की जिम्मेदारियों को सामने रखा। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर ट्रेड यूनियन आंदोलन की मुख्य धारा में महिलाओं की हिस्सेदारी की अहमियत पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि महिलाओं की भागीदारी के बिना आंदोलन अधूरा रह जाएगा। एस डब्ल्यू एफ आई के महामंत्री मृणाल बनर्जी तथा सीटू सचिव जीवन राय ने भी सभा को सम्बोधित किया।

सम्मेलन ने काम के अधिकार, प्रौढ़ शिक्षा, महिलाओं पर अत्याचार और सामाजिक शोषण अलगाववाद व साम्प्रदायिकतावाद के खिलाफ संघर्ष आदि पर कई प्रस्ताव पारित किया।

सम्मेलन में शिरकत कर रहीं 385 महिलाओं को टाटा व बर्नपुर इस्पात कारखाना के बिरादराना संगठनों के प्रतिनिधियों ने भी सम्बोधित किया।

सम्मेलन ने 31 सदस्यीय समन्वय समिति का भी चुनाव किया।

मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार की महिला व बाल विकास विभाग से सांसद श्री समर मुखर्जी को 17 अगस्त 1990 को निम्नलिखित पत्र भेजा गया।

माननीय श्री मुखर्जी

आंगनवाड़ी महिलाओं की तैयारी समिति के बारे में एवं आंगनवाड़ी महिलाओं की मानदेय राशि में बढ़ोत्तरी के बारे में 12 जुलाई को माननीय प्रधानमंत्री को लिखे गए आपके पत्र का कृपया अवलोकन करें।

आंगनवाड़ी सेविकाओं व सहायिकाओं की मुख्य मांग उनकी मानदेय राशि में बढ़ोतरी की है और यह सवाल वित्त मंत्रालय के विचाराधीन है, यह भी आपको सूचित करना है कि हरियाणा की आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने उन्हें सरकारी कर्मचारी घोषित किए जाने की मांग करते हुए उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर की है। इस मांग को स्वीकार करना इसलिए मुश्किल है कि आई सी डी एस कार्यक्रम समाज के सामूहिक हिस्सेदारी पर आधारित हैं। आंगनवाड़ी सेविकाएं व सहायिकाएं अंशकालिक मानसेवी कर्मचारी हैं। जिन्हें उस समुदाय और साधारणतया उसी गांव से लिया जाता है। बहरहाल, यह सवाल अब न्यायालय के विचाराधीन है।

आदर सहित

आपका

मीनाक्षी आनंद चौधरी

[पृष्ठ 9 का शेष]

बात कह पाते थे जैसे कि बुजुर्ग कार्यकर्ता।

कामरेड बी. टी. आर हमेशा सामूहिक फंक्शनिंग पर बहुत जोर देते थे और पर्सनल्टीकल्ट के खिलाफ थे। जब जब मैं उनसे किसी भी सांगठनिक मुद्दों पर सलाह मांगने गयी कामरेड बी. टी. आर एक ही जवाब देते थे कि इस पर बात करेंगे। हालांकि मैं जानती थी कि मेरे इन सवालों का जवाब कामरेड बी.टी.आर. के पास है और बाद में भी मुझे वही जवाब मिलेगा जो अभी भी वे मुझे दे सकते हैं।

कामरेड बी. टी. आर का व्यक्तित्व व कार्य हमारे लिए प्रेरणा का ऐसा स्रोत है जिसे उनकी मृत्यु हमसे नहीं छीन सकती, वह हमारे साथ हमेशा रहेंगे।

12 जून को जयपुर प्रदर्शन की रिपोर्ट

□ मधु सेठिया

आंगनवाड़ियों में काम करने वाली महिलाओं को स्थायी सरकारी कर्मचारी माना जाए। अंतरिम राहत के रूप में कार्यकर्त्ता को 600/-रुपये व सहायिका को 400/-रुपये प्रतिमाह दिया जाये। सरकारी नियमानुसार आकस्मिक व चिकित्सकीय अवकाश दिया जाए। प्रमोशन व ट्रेनिंग सुविधा दी जाये। ईंधन बिल व किराया बिल का भुगतान प्रतिमाह बिना विलंब किया जाए। यूनियन का एक प्रतिनिधि प्रोजेक्ट कमेटी में शामिल किया जाए आदि मांगों को लेकर राजस्थान के 4 जिलों से आयी आंगनवाड़ी कर्मी महिलाओं ने राज्य सचिवालय पर प्रदर्शन किया।

12 जून, 1990 को हुए इस प्रदर्शन में जयपुर, उदयपुर के अलावा आदिवासी क्षेत्रों डूंगरपुर व चित्तौड़ की कर्मियों ने भी भाग लिया। जून की भयंकर गर्मी में भी सुदूरवर्ती क्षेत्रों से भी महिलाएं आयीं। अनेक महिलाओं के साथ छोटे-छोटे बच्चे भी आये थे।

राजस्थान में आंगनवाड़ियों में काम करने वाली महिलाओं की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। केन्द्र सरकार द्वारा दिए गये निर्देश दफ्तरों की फाइलों में बंद पड़े रहते हैं। जो कुछ सुविधाएं दी भी जाती हैं वह भी पूरे राज्य में एक समान नहीं। मानदेय राशि का भुगतान भी कई-कई महीनों तक नहीं किया जाता। ईंधन का बिल पास कराने में तो वर्षों लग जाते हैं। सड़ा-गला पोषाहार देना पोषाहार बिना तोले वितरत करना, तथा उच्चाधिकारियों द्वारा कार्यकर्त्ता व सहायिका से अपमानजनक व्यवहार तो आम बात है।

इस शोषण के खिलाफ आवाज उठाने के लिए सीटू द्वारा अखिल भारतीय फैडरेशन बनाने के लिए दिल्ली में हुए सम्मेलन से प्रेरणा पाकर राजस्थान में सर्वप्रथम उदयपुर और फिर जयपुर में यूनियन बनाने, धरने व प्रदर्शन करने की कार्यवाही प्रारम्भ की गई। परन्तु सरकार ने इन समस्याओं पर उचित ध्यान देने की बजाय महिलाओं को डराना धमकाना व यूनियन से जबरन दूर रखने का रवैया अपनाया। सरकार की इस दमन पूर्ण रुख के बावजूद राजस्थान में आंगनवाड़ी महिलाओं की यूनियनें 5 जिलों में बन चुकी हैं तथा 12 जून के राज्य-स्तरीय प्रदर्शन में लगभग 800 महिलाएं शामिल हुईं।

जुलूस दोपहर 12 बजे शहर के मुख्य मार्गों से होता हुआ एक बजे सचिवालय पहुंचा। सचिवालय पर न्यूनतम वेतन 35 रुपये रोज करने की मांग लेकर अनिश्चित कालीन भूख हड़ताल पर बैठे श्रमिक अभियान समिति के नेताओं का प्रदर्शन करते महिलाओं ने नारों से समर्थन व अभिनन्दन किया तथा सचिवालय पर खड़ी पुलिस घेरे को तोड़कर महिलाएं सचिवालय मुख्य द्वार पर पहुंच गयी। यहां आए हुए श्रमिक अभियान समिति के का० कृष्ण कान्त, व सांसद का० श्योपत सिंह ने उन्हें संबोधित किया। कामकाजी महिला समन्वय समिति की ओर से मधु सेठिया व ज. म. स. की ओर से सुमित्रा चोपड़ा भी सभा में बोलीं। अनेक आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने भी विचार प्रकट किए। जयपुर की स्नेहलता शर्मा व भाग्यवती, उदयपुर की सूर्या कंवर मांगी देवी, डूंगरपुर की मणि बेन आदि ने आंगनवाड़ी महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला। इनके भाषण जोश से भरे थे, तथा संगठन को बढ़ाने व मजबूत करने के पुरजोर इरादों को दर्शाने वाले थे।

सभा की अध्यक्षता आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पुष्पा शर्मा ने की और 7 अगस्त को दिल्ली चलो के नारों के साथ सभा समाप्त हुई।

पढ़ें

कामकाजी महिला

(हिन्दी द्विमासिक पत्रिका)

कीमत : एक प्रति : 1 रुपया
वार्षिक चन्दा : 6 रुपये

अपनी प्रतियों के लिए हमें लिखें :

सी आई टी यू 6, ताल कटोरा रोड
नई दिल्ली-110001

[पृष्ठ 8 का शेष]

इसलिए अपने लिए उपलब्ध वक्त में आप ज्यादा से ज्यादा हासिल करना चाहते थे। फिर भी आपको हमारी सलाह माननी चाहिए थी। कई बार मैंने आपसे संपूर्ण स्वास्थ्य परीक्षण के लिए कहा था। लेकिन आप बम्बई में हों या दिल्ली में अपने स्वास्थ्य के लिए हमेशा आपके पास वक्त का अभाव था। मुझे लगता है कि कुछ अंशों में हम और कुछ आप, अपने स्वास्थ्य पर पर्याप्त ध्यान न देने के लिए जिम्मेदार हैं।

अब जबकि आप हमेशा के लिए रुखसत हो चुके हैं, एक सवाल बार-बार जेहन में कौंधता है, "आपने हमें तब ही क्यों छोड़ा जब, आप जानते थे, आपकी जरूरत हमें सबसे ज्यादा थी?" लेकिन मुझे पता है आप इस सवाल का जवाब भी आपने हंसोड़ अन्दाज में देते जैसे 'मैं क्या करूं?' एक तांत्रिक ने मुझसे कहा था कि मेरी जिन्दगी को खतरा है, यदि मैं 80 पार कर जाऊं, और उसकी भविष्यवाणी सच निकली है।" ऐसे मोकों पर भी चुटकुले छोड़ने का आपका स्वभाव नहीं जाता।

इतना ही कह सकता हूं कि आपकी कमी बहुत खलती है और मुझे बचपन के आपके साथ गुजारे दिन याद आते हैं। आपको पतंग की घटनाएं याद हैं? जब मैं छठी में था तो आपने मदनपुरा के एक कामरेड से 20 पतंग लाकर दिए थे। मैं ऐसी 'पूंजी' पाकर इतना उत्तेजित था! लेकिन अगले दिन जब मैंने शैतानी की तो आपने मुझे सारे पतंगों को नष्ट कर देने को कहा। मेरी पूरी पूंजी को आप बर्बाद करवाना चाहते थे। मेरे आंसुओं का आप पर कोई असर नहीं हुआ, कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा था। लेकिन एक पतंग को फाड़ने के बाद आपने इस वादे के साथ मुझे रुक जाने के लिए कहा कि आगे शैतानी नहीं करूंगा। क्या राहत पहुंची? आज तक मैंने वैसा नहीं किया है। और जब मैं अपने कॉलेज का प्रतिनिधित्व कर रहा था, आपसे 35/- का एक बैट मांगा था। बड़े अच्छे ढंग से, पर स्पष्ट शब्दों में आपने कहा था हमारी औकात इतनी नहीं है। मैं निराश तो हुआ पर निहितार्थ समझकर आगे कुछ नहीं कह सका। क्या मैं उन दिनों को भूल सकता हूं जब हम एक ही कमरे में रहते थे और आई हमारी जिन्दगी चलाने के लिए काम करती थीं। और एक दिन सामान खरीदने के लिए मुझे पुराने अखबार बेचने पड़े थे। बाबा, याद है आपको जब आई रात को देर से लौटकर आती थीं और मैं उनसे नाराज हो जाया करता था? एक दिन हम दोनों ने यह तय किया था कि उनसे कहेंगे कि मुझे तेज बुखार है। आई काम करके देर से लौटीं और उन्होंने मुझे बिस्तर पर पाया। जब उन्होंने मेरे बारे में पूछा आपने बताया कि बुखार है। उन्होंने तुरंत पूछा कितना। और आप मुझसे पूछ बैठे, "क्या तय किया था कहने को, कितना?" मुझे याद है आपकी वह मधुर मुस्कुराहट जो इस घटना को सुनाने के बाद हॉस्पीटल में आपके चेहरे पर खेली थी। वे आपके लिए राजनीतिक तौर पर और हमारे लिए आर्थिक तौर पर मुश्किल दिन थे। लेकिन मैंने आपको इस पर कभी चिंतित नहीं पाया। आपके और आई के त्याग को मैंने देखा है, महसूसा है। बचपन में मैंने आप लोगों का देर रात तक—पार्टी मीटिंगों से लौटने का इन्तजार किया है, मैंने काफी अरसे तक गरीबी और एकाकीपन का अहसास झेला है। लेकिन तमाम दुष्कारियों के बावजूद आप अपने काम से अंतिम समय तक कभी नहीं डिगे।

आपको कितनी बार कहा अपने साथ आकर आराम से रहने के लिए। हर बार आप कोई न कोई बहाना मार जाते हलांकि आपने मुक्त रहने पर मुझसे 10-15 दिन देने का वादा किया था। लेकिन आप कभी भी फ्री नहीं होते थे। कभी चुनाव होते, कभी पार्टी सम्मेलन, कभी राज्य या सीटू सम्मेलन। लेकिन आपसे वक्त मांगने का मतलब आपके काम से आपको जुदा रखना होता जिससे आप परेशान हो जाते। लेकिन मुझे यह भी पता था कि आप अपना किया वादा भूल नहीं सकते।

लेकिन वक्त शीघ्रता कर गया। हमेशा की तरह दस्तावेज तैयार करते, सभाओं में जाते, गुत्थियां सुलझाते देश के दुश्मनों के खिलाफ रणनीतियां बनाते, इतने व्यस्त रहते कि आपको अंदर के शत्रु का पता ही नहीं चला। एक चालाक दुश्मन जिसको आपने कम करके आंका। हां आपने कभी गलतियां की होंगी, जैसा कई लोगों ने बताया है। लेकिन उन गलतियों को प्रारंभिक असफलताओं के बाद सुधारा जा सकता था। लेकिन इस बार की गलती का खामियाजा हम सब पर भारी पड़ने वाला था। आपके भीतर का दुश्मन अपने तंतु फैलाता रहा, इस कदर कि

एकाध लक्षणों से आप डरे नहीं, काम करते ही गये। आपका शरीर दुर्बल होता गया और जब तक हमें पता चलता कि क्या हुआ आप टाटा अस्पताल में अपने शरीर को लेकर आंतरिक शत्रु से लड़ने में व्यस्त थे। लेकिन अब तक काफी देर हो चुकी थी। हड्डी का चित्र, जब मैंने उसे देखा मुझ पर हंस रहा था। जैसा कि डॉक्टरों ने कहा वे हड्डी के चित्र जैसे थे। "देखिए यह पेल्विस से रीढ़ से लेकर खोपड़ी तक फैल गया है।" हां, लगभग खोपड़ी पर नहीं। ना आप वहां भी, इस भयंकर और दुर्दान्त दुश्मन पर विजयी थे। अंत तक उसने आपके मस्तिष्क को जीतना चाहा, पर असफल रहा। आप शांत और आश्वासनप्रद थे पर आपको नतीजा पता था। तमाम यातनाएं झेलने के बावजूद आप टाटा अस्पताल के सबसे सहयोगी मरीज थे। आपने किसी तरह की चिकित्सा से कभी मना नहीं किया। जब आपके अंगों ने काम करना बंद कर दिया तब जाकर आपने कहा कि आपके 'मसिया' लिखने का वक्त आ गया है। हम सब आपको देखते रहे —हताश, निस्सहाय। अब मेरा एक मात्र लक्ष्य था अन्तिम दिनों में आपको आराम से रखना, आपकी मुस्कुराहट उगाना। अपने बचपन के दिनों की कई कहानियां, कई चुटकुले, घटनाएं नहीं सुनाए मैंने आपको और कुछ मुस्कुराहटें भी नहीं लीं उधार ? मुझे पता था आपको यह सब अच्छा लग रहा था लेकिन वह सब करने में— अपने चेहरे पर दुःख का भाव नहीं लाने देने, शांत रहने में—मुझे जबर्दस्त संघर्ष करना पड़ रहा था क्योंकि डाक्टरों ने मुझसे वह सब कह रखा था जो मैं न सुनना चाहता था न ही मानना।

मैं खुश हूं इसलिए कि आपको अंतिम 15 दिनों में खुश रख सका, और इसलिए भी कि आपने पार्टी कार्यों से मुक्त रहकर अपने 15 दिन मुझे दिए। हां, आपने तो अपना वादा बिल्कुल पूरा किया पर मैं इस वादे का इन्तजार असंख्य सालों तक कर सकता था।

प्यार,

उदय

5.6.90

महिला संगठनों की मांग

दवा उद्योग की दाब-धौंस के आगे सरकार झुके नहीं

महिला संगठनों ने, दवा उद्योग तथा व्यापार के 7 अगस्त के उद्योग बंद तथा 8 अगस्त को प्रधानमंत्री के निवास पर मोर्चा निकालने के कार्यक्रम की भर्त्सना की है और केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि दवा उद्योग के घड़ियालों के दबाव तथा ब्लैकमेल में न आयें, जो तमाम आवश्यक तथा जीवन रक्षक दवाओं की कीमतों में बढ़ोतरी की अपनी मांग के जरिए पूरे समाज को तबाह करने पर तुले हुए हैं। इस सिलसिले में दिल्ली में जारी महिला संगठनों के संयुक्त वक्तव्य पर अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की उपाध्यक्ष विमल रणदिवे, नेशनल फेडरेशन आफ इंडियन वूमेन की नेता विमला फारुखी, वाइ डब्लू सी ए आफ इंडिया की साधना गांगुली और महिला दक्षता समिति की उपभोक्ता विंग की उपाध्यक्ष कैलाश रेखी ने दस्तखत किये हैं।

महिला संगठनों का कहना है कि दवाओं की कीमतें पहले ही बहुत ज्यादा हैं और उन्हें खरीदना आम आदमी के बूते से बाहर है। इसके अलावा, पहले ही दवा समेत सभी आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी के बोझ के तले जनता पिसी जा रही है। इस पृष्ठभूमि में, दवा उद्योग की मांग को सरकार अनुचित ठहराते हुए, संयुक्त बयान में सभी महिला संगठनों से अपील की गयी है कि वक्तव्य जारी करने वाले संगठनों के साथ मिलकर 8 अगस्त का दिन, दवाओं की कीमतों में बढ़ोतरी की हरेक कोशिश का विरोध करने तथा दवाओं की कीमतों में भारी कमी लाने, नुकसान देह तथा बेतुकी दवाओं पर प्रतिबंध लगाने, नकली तथा घटिया दवाओं के उत्पादन तथा सप्लाई पर अंकुश लगाने, हाथी कमेटी की रिपोर्ट को लागू करने तथा तमाम बहुराष्ट्रीय दवा फर्मों का राष्ट्रीकरण करने की मांग के दिन के रूप में मनायें। वक्तव्य में देशभर की महिलाओं का भी आह्वान किया गया है कि उन मांगों पर विभिन्न राज्यों में आयोजित की जाने वाली कार्रवाइयों में हिस्सा लें।

आंगनवाड़ी मुलाजिम यूनियन, पंजाब

[हम यहां आंगनवाड़ी कर्मचारियों द्वारा पंजाब एवं सहारनपुर (उ० प्र०) संगठनों द्वारा प्रधानमंत्री को दिये गए ज्ञापन प्रस्तुत कर रहे हैं—संपादक]

विषय : आंगनवाड़ी मुलाजिमों की मांगों का मांग-पत्र

श्रीमान जी,

हम पंजाब के ब्लाक जालन्धर (अर्बन) में आंगनवाड़ी केन्द्रों में वर्कर व हैल्पर्स का काम करने वाली सदस्य आंगनवाड़ी मुलाजिम यूनियन पंजाब की ओर से आज 10 जुलाई, 1990 को अखिल भारतीय स्तर पर देश भर में मनाये जा रहे 'मांग दिवस' पर यह रैली आपकी सेवा में निम्नलिखित 'मांग-पत्र' आपको स्वीकार करने के लिये भेज रही हैं। कृपा करके हमारी यह मांगें तुरन्त स्वीकार की जायें।

मुख्य मांगें—

1. आंगनवाड़ी वर्कर एवं हैल्पर्स को बुनियादी तौर पर सरकारी मुलाजिम करार दिया जाये तथा दूसरे सरकारी मुलाजिमों की तरह योग्यता अनुसार रैगूलर पे स्केल, भत्ते, पैनशन तथा दूसरी सुविधाएं दी जायें।

2. पांच साल की सेवा के उपरान्त आंगनवाड़ी वर्कर्स और हैल्पर्स की उन्नति की व्यवस्था की जाये तथा 'गायानी' के उपरांत बी. एस. को यूनिवर्सिटी के नियमानुसार जनरल बी. ए. के बराबर माना जाये।

3. उन्नति सीनियारिटी के आधार पर की जाये और इसके लिये सीनियारिटी लिस्ट बनाई जाये।

4. अधिक योग्यता वाली वर्कर्स और हैल्पर्स को अतिरिक्त उन्नति दी जाये।

5. पंजाब सरकार की स्त्री मुलाजिमों की तरह आंगनवाड़ी स्त्री मुलाजिमों को बिना शर्त 6 महीने की 'प्रसूति' अवकाश दिया जाय।

6. खुराक और दवाइयों को समयानुसार नियमित रूप से दिया जाय और इसके लिए सी. डी. पी. ओ. को जिम्मेदारी सौंपी जाये।

7. अतिरिक्त चार्ज, प्रसूति छुट्टी और ट्रेनिंग अवधि के लिए वेतन भुगतान शीघ्र और बिना बिलम्ब दिया जाये।

8. आंगनवाड़ी केन्द्रों की अपनी बिल्डिंगें बनाई जाये। जब तक यह निर्माण न हो इन केन्द्रों के लिये इमारतें उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी सी. डी. पी. ओ. को दी जाये। किराये पर लिये गये मकानों के किराये आदि भी सरकार अदा करे।

9. आंगनवाड़ी वर्कर्स और हैल्पर्स को वेतन समय पर दिया जाये और इसकी तिथि निश्चित की जाये, ताकि हर वर्कर्स को समय पर वेतन मिल सके।

10. आंगनवाड़ी वर्कर्स और हैल्पर्स को बदली और रिक्त स्थानों पर स्थानांतरण (ट्रांसफर) के रास्ते में रुकावटें डाली जायें और ब्लाक स्तर पर स्थानांतरण का अधिकार सी. डी. पी. ओ. को दिया जाये।

11. सर्कल लैवल (केन्द्रीय स्तर) पर··········स्टाफ नियुक्त किया जाये।

12. वर्कर्स और हैल्पर्स की ड्यूटी निर्धारित की जाये और उनसे घरेलू या प्राइवेट (व्यक्तिगत) काम को बन्द किया जाये।

13. आंगनवाड़ी स्कीम (योजना) पंजाब के सारे ब्लाकों में लागू की जाये।

14. प्रोजेक्ट में 2 कि. मी. से अधिक दूरी कार्य करने के लिए टी. ए. दिया जाये।

15. 13 सितम्बर 1987 को लड़ी गई वेतन की राशि बार-बार प्रार्थना करने पर भी नहीं दी गई। इसका भुगतान तुरन्त किया जाये।

16. 21 सितम्बर 1988 की आनन्दपुर और माजरी (रोपड़) ब्लाक में काटा गया वेतन अदा किया जाये।

17. शाहकोट ब्लाक में 7 जनवरी से 31 जनवरी 1987 तक का शेष वेतन तथा बंगा ब्लाक की बाकी वेतन दी जाये।

18. नियुक्तियों के समय की जा रही बड़ी मात्रा में धांधलियों को बन्द किया जाये।

धन्यवाद सहित !

आपकी शुभ चिन्तक

(अर्बन)	**(काशमीर कौर)**	**(सिम्मी शर्मा)**
ब्लाक जालन्धर	ब्लाक प्रधान	ब्लाक सचिव

सहारनपुर, उ. प्र.

बाल-विकास परियोजना के सम्बन्ध में आंगनवाड़ी कार्यकर्मियों की माँगों के सम्बन्ध में सतपाल कौर चौधरी (अध्यक्ष) ने निम्न ज्ञापन दिया :

सेवा में,

श्रीमान श्रम एवं कल्याण मंत्री श्री राम विलास पासवान भारत सरकार, नई दिल्ली ।

महोदय,

अपने दूरस्थ जनपदों से आपकी सेवा में उपस्थित होकर हम आंगनवाड़ी कार्यकर्मियां आपका ध्यान आज से लगभग बारह वर्ष पूर्व उ. प्र. के प्रत्येक जनपद के एक ब्लॉक में लागू की गई इस बाल-विकास परियोजना की ओर आकर्षित करना चाहती हैं। जिसमें हम आंगनवाड़ी कार्यकर्मियों बालकों की शिक्षा, स्वास्थ्य और उनके मानसिक विकास की विभिन्न योजनाओं को अत्यन्त परिश्रम से पूर्णकालिक सेवा करते हुए संचालित कर रही हैं। परन्तु उसके बदले हमें उचित वेतन और दूसरी जीवनोपयोगी आवश्यक सुविधायें भी पर्याप्त मात्रा में सरकार द्वारा उपलब्ध नहीं कराई जा रही हैं। पिछली सरकारों ने भी हमारे आन्दोलनों के अवसर पर झूठे वादे और थोथी तसल्लियाँ देकर हमारा अन्यायपूर्वक शोषण ही किया है। अतः आपकी सेवा में हम पुनः अपनी उचित मांगों के लिए यह ज्ञापन प्रस्तुत करके आशा करती हैं कि आप सरकार से हमें उचित सुविधाएं दिलाकर हमारी और बालकों के संवांगीण विकास में अपना मूल्यवान सहयोग प्रदान करें। हमारी मुख्य मांगें निम्नवत् हैं :

1. बाल विकास परियोजना (आंगनवाड़ी) को स्थायी राजकीय सेवा स्वीकार किया जाये।

2. आंगनवाड़ी कार्यकर्मियों की सेवा शर्तें तय करके 250-350 रुपये के अत्यल्प मान देय के स्थान पर शिक्षा विभाग के प्राईमरी अध्यापकों के समान निश्चित वेतनमान दिया जाये।

3. आंगनवाड़ी कार्यकर्मियों की सेवायें स्थाई करके उन्हें प्राविडेन्ट फण्ड, बीमा और पेंशन की सुविधायें भी दी जायें।

4. सुपरवाईजर (मुख्य सेविका) के पद पर सीधी भर्ती द्वारा बाहर से सभी नियुक्तियाँ न करके पहले आंगनवाड़ियों की बिना आयु के प्रतिबन्ध के प्रोन्नति की जाये।

5. शिक्षण केन्द्र के किराये, ब्लॉक केन्द्र से पुष्टाहार प्राप्त करने के किराए और ब्लांक केन्द्र पर मीटिंगों में आने-जाने के किराए में समुचित वृद्धि की जाए और दिया जाये।

6. आंगनवाड़ी कार्यकर्मियों को कम से कम दो मास का सःवेतन मातृत्व अवकास दिया जाये।

7. आवश्यक शिक्षण सामग्री, दवायें, पुष्टाहार एवं सामान के रखरखाव के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान कराये जायें।

8. आंगनवाड़ी कार्यकर्मियों को मैडिकल सुविधा भी प्रदान की जाये।

त्रिपुरा में इंका–टी यू जे एस का आतंकराज

त्रिपुरा में आदिवासी स्वायत्त जिला परिषद के 3 जुलाई संपन्न चुनाव के दौरान तथा चुनाव के बाद हिंसा और आदिवासी जनता पर हमलों की अनगिनत शिकायतें राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के पास आयी थीं। इन शिकायतों के आधार पर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के नेताओं ने मौके पर जाकर हालात का अध्ययन करने और अपनी रिपोर्ट देने के लिए, यशवंत सिन्हा के नेतृत्व में अपने सांसदों का एक छः सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भेजा था। प्रतिनिधिमंडल ने त्रिपुरा में लगभग 5000 लोगों से मुलाकात की और 701 निजी अर्जियां इकट्ठी कीं और विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों से 34 ज्ञापन स्वीकार किए।

अनेकों वहशी और पंगली कारनामों के अलावे टीम यह जानकर सबसे ज्यादा स्तब्ध रह गई कि चुनाव से पहले तथा चुनाव के बाद त्रिपुरा में बड़े पैमाने पर महिलाओं के साथ बलात्कार तथा जोर-जबर्दस्ती की वारदात हुई हैं। महिलाओं ने टीम के समक्ष खुद आकर यह बताया कि किस प्रकार उन्हें बलात्कार और कई मामलों में तो सामूहिक बलात्कार का निशाना बनाया गया था। इन वारदातों की रिपोर्ट दर्ज करायी गई है, अभियुक्तों के नाम भी रिपोर्ट में दर्ज है, फिर भी किसी एक मामले में भी न तो किसी अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया है और न आगे की कोई कार्रवाई ही की गई है। और भी भयानक बात यह कि महिलाओं को कोई संरक्षण नहीं दिया जा रहा है और महिलाएं पूरी तरह से असहाय होकर रह गई है।

जनवादी महिला समिति का तीसरा राज्य सम्मेलन

बिहार राज्य जनवादी महिला समिति का तीसरा राज्य सम्मेलन अत्यन्त ही गरमजोशी के साथ 26 मई, 1990 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन के कार्यक्रम का प्रारंभ 26 मई 1990 को 2 बजे दिन से झण्डोतोलन के साथ हुआ। बिहार राज्य जनवादी महिला समिति की अध्यक्ष का० रामपुकारी देवी के द्वारा झण्डोत्तोलन से किया गया। इसके तत्काल बाद हाजीपुर टाउन हॉल जो बी० टी० आर० नगर के नाम पर सम्मेलन स्थल बनाया गया था, टाउन हॉल के अन्दर सभी एक सौ सैंतीस प्रतिनिधियों ने तीन सदस्यीय अध्यक्ष मण्डल का चुनाव किया।

तत्पश्चात् एक शौक प्रस्ताव कॉ० मंजु प्रकाश विधायिका, विधान सभा एवं वि० रा० ज० म० स० के संयुक्त मंत्री ने पेश किया—का० बी. टी. आर, का० आनन्दी सिंह, का० सरोज मुखर्जी के लिए। इसके पूर्व ज. म. स. के नेतृत्व में महिलाओं का एक विशाल जुलूस निकाला गया जो शहर वैशाली के विभिन्न मार्गों पर मार्च करते हुए नारा लगाते हुए कचहरी के मैदान में आम सभा में परिणत हो गया। का० राम पुकारी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल आम सभा की गयी।

इस सभा में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए पश्चिम बंगाल सरकार मंत्री, का० छाया बेड़ा ने महिलाओं की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए आह्वान किया महिलाओं को अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए आगे आकर संघर्ष करना चाहिए। भगवान या पुरुष के भरोसे अधिकार प्राप्त नहीं किया जा सकता है। उन्होंने पिछली सरकार की आलोचना करते हुए उसे महिलाओं पर दमन करने वाली सरकार के रूप में रेखांकित किया।

ज. म. स. के केन्द्रीय कमेटी के संयुक्त मंत्री एवं पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी की महामंत्री का० श्यामली गुप्ता ने अपने भाषण में जोरदार शब्दों में महिलाओं का आह्वान करते हुए कहा कि भारत की महिलाएं अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए संगठित हो रही हैं। हालांकि संगठन अभी शैशव अवस्था में ही है फिर भी इसकी बढ़ोत्तरी की गति तेज है और उम्मीद है कि आने वाले दिनों में महिलाएँ अपने अधिकारों को प्राप्त कर सकेंगी।

बिहार राज्य किसान सभा के अध्यक्ष का० कृष्णकान्त सिंह ने सभा को सम्बोधित करते हुए महिलाओं को आश्वासन दिया कि आन्दोलन और संगठन को आगे बढ़ाने के लिए किसान सभा महत्वपूर्ण सहयोग देती रहेगी।

वि.रा.ज.म.स. के महामंत्री का० सुधा बिन्दु मित्रा ने महिलाओं को आह्वान करते हुए बिहार की सामंती परिस्थिति का उल्लेख किया और उन्होंने बताया कि इन परिस्थितियों में महिलाओं के संगठन को बनाने में कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है जबकि पूंजीवाद, रूढ़िवाद, जातिवाद आदि महिलाओं पर शोषण, दमन, व अत्याचार का प्रतीक बना हुआ हुआ है। का० राम पुकारी देवी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महिलाओं से आगे आने और संघर्ष करने का आह्वान किया।

इसके बाद पुनः छः बजे से प्रतिनिधि सभा का सत्र शुरू होते ही प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए स्वागताध्यक्ष की ओर से का० अर्पणा भट्टाचार्या ने स्वागत भाषण दिया।

प्रतिनिधि सत्र का उद्घाटन का० श्यामली गुप्ता, संयुक्त मंत्री केन्द्रीय महिला समिति, ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने महिलाओं से जोरदार संघर्ष करने का आह्वान किया।

का० सुधा बिन्दु मित्रा (वि. रा. ज.म.स.) ने सम्मेलन में बहस के लिए एक रिपोर्ट पेश की। रिपोर्ट में पिछले से आज तक की गतिविधियों, आन्दोलन और संगठन से सम्बधित सारी बातों को ब्यौरेवार पेश किया। महामंत्री की रिर्पोट पर 22 प्रतिनिधियों ने बहस में हिस्सा लिया। इसके बाद महामंत्री के जवाब के बाद रिर्पोट सर्वसम्मत स्वीकार कर ली गयी। आज के कार्यक्रम को संचालित करने के लिए 34 सदस्यीय राज्य समिति का गठन किया गया, जिसकी अध्यक्ष का० राम पुकारी देवी महामंत्री, का० सुधा बिन्दु मित्रा पुनः चुन लीं गईं।

इसके अतिरिक्त जिन्हें चुना गया उनके नाम व पद इस प्रकार हैं :—उपाध्यक्ष का० मृदुला घोष, का० सरिता

[शेष पृष्ठ 24 पर]

गैस-पीड़ित महिला उद्योग कर्मचारी एकता यूनियन भोपाल का आह्वान

हमें चाहिए जिंदगी भर के रोजगार की गारंटी।
सरकार द्वारा तय न्यूनतम मजदूरी का भुगतान।

आज हमारी हालत क्या है ? गैस राहत द्वारा स्टेट इण्डस्ट्रीज कॉरपोरेशन लिमिटेड के जरिये हमें सिलाई का कार्य दिया जा रहा है। एक दिन में 10 रु० का काम मध्यप्रदेश शासन द्वारा क्लेक्टर वेतन रेट 20 रु० रोज है। हर चीज की कीमत आसमान छू रही है। एक माह में 320 रु० में गुजारा होना मुमकिन नहीं है।

दूसरी ओर हमारे द्वारा की गई सिलाई से 40 लाख रुपये का मुनाफा सरकार ने कमाया है। जिस सिलाई के हमें 4 रुपये दिये जाते हैं उसे 26 रुपये में बेचा जाता है। यदि राहत का कार्य हो रहा है तो यह मुनाफे का पहाड़ कहाँ जमा किया जा रहा है, बात साफ है हमें ज्यादा भुगतान दिया जा सकता है परन्तु सरकार नहीं दे रही है। इसके अलावा जे. पी. नगर शेट की महिलाओं के साथ सौतेला बर्ताव राज्य शासन कर रहा है। हमें बंडल व सिलाई के साथ रसीदें नहीं दी जाती हैं, यदि एक दिन किसी महिला का नाम हो जाता है तो उसका माल यहाँ के व्यवस्थापक हजम कर जाते हैं। आये दिन महिलाओं के नाम काटने की धमकी दी जाती है। व्यवस्थापकों का रवैया महिलाओं के प्रति ऐसा है जैसे हमने गैस पीड़ित होकर उनकी परेशानियाँ बढ़ा दी हैं। जैसे हम उनके गुलाम हैं जबकि सच्चाई यह है, कि मेहनत करके उत्पादन हम कर रहे हैं तथा कुर्सियां दूसरे तोड़ रहे हैं। सिचाई केन्द्रों में काम करने वाली महिलाओं को प्रतिमाह 300 रु० से अधिक आमदनी होती है। ऐसे हजारों गैस-पीड़ित परिवार हैं जिनके लिए सिचाई केन्द्रों में दी जानेवाली राशि सरकार द्वारा घोषित प्रशिक्षित मजदूरों के न्यूनतम मजदूरी की राशि से कम है। सिलाई केन्द्रों में दी जानेवाली राशि के साथ-साथ गैस-राहत विभाग की ओर से विशेष भत्ता दिया जाये ताकि महिलाओं को कम-से-कम घोषित मजदूरी तो मिले।

हम अपनी तकलीफों को देखते हुए यूनियन की निम्न मांगें शासन के सामने रखते हैं।

1. सिलाई सेंटरों की महिलाओं को न्यूनतम 20 रु० दिन का भुगतान गारंटी से किया जाये।

2. हमें लगातार काम देने की गारंटी की जाये।

3. सेंटरों की महिलाओं को छुट्टी के दिनों का कार्य दिया जाये।

4. सेंटरों की सभी सिलाई पानेवाली महिलाओं को परिचय-पत्र दिया जाये तथा साथ में रोज के काम को दर्ज करने के लिए कार्ड दिया जाये जिसमें रोज दिया गया कार्य, उसके भुगतान का विवरण दर्ज किया जाये ताकि मनमानी ढंग से किसी को हटाया न जा सके तथा अनियमितताओं को रोका जा सके।

5. माल जमा करने, नया बंडल लेने में अधिकारियों की मनमानी रोकी जाये। लंच का समय छोड़कर 10 से 6 बजे तक माल जमा किया जावे व बंडल दिये जायें, माल लेने के दिन किसी कारणवश गैर हाजिर होनेवाली महिला को दूसरे दिन उसके हिस्से का माल दिया जाये।

6. कलेक्टर के द्वारा 1 माह में 5 बंडल बढ़ाने का आदेश दिया गया परन्तु हम गैस-पीड़ित महिलाएं इतना काम नहीं कर सकतीं, आप से निवेदन है कि बंडल बढ़ाने की बजह पैसे बढ़ाये जाएं।

7. प्रत्येक महिला को 15 दिन में दो बार चिकित्सा जांच की सुविधा दी जाये। आर. सी. एम. आर. के निर्देशों के अनुसार प्रत्येक महिला के यूरीन धायों की, सायनेट की जांच की जाये तथा जहर के कारण का इंजेक्शन तदनुसार दिया जाये। प्रत्येक महिला को हैल्थ कार्ड दिया जाये।

जलज शुक्ला	सुनीता श्रीवास्तव	नीलम गुप्ता
(अध्यक्ष)	(उपाध्यक्ष)	(महामंत्री)

मेरे गैस पीड़ित पुत्र के उपचार हेतु

माननीय प्रधानमंत्री महोदय, भोपाल
भारत सरकार, नई दिल्ली 21.1.90

महोदय,

नम्र निवेदन है कि उपरोक्त विषय के संदर्भ प्रार्थनी

का पुत्र मन्सुर अली वल्द मकसूद अली उम्र 12 वर्ष जिसको गैस लगे हुए लगभग 5 वर्ष बीत गये और उसी समय से भोपाल स्थित सभी चिकित्सालयों में उसका उपचार करा रहे हैं लेकिन उसका स्वास्थ्य निरन्तर गिरता जा रहा है।

परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत दयनीय है, मेरे पति भी बेरोजगार हैं। और उन्हें भी गैस लगने से पहले की तरह हम्माली का कार्य नहीं कर सकते हैं। इस तरह मेरे बच्चे के इलाज के लिए मुख्यमंत्री, कलेक्टर, स्वास्थ्य मंत्री मध्यप्रदेश शासन को कई बार लिखा परन्तु उनकी ओर से किसी तरह की कोई उचित कार्यवाही नहीं होते देखकर अंतिम प्रयास आपकी ओर आशा लगाये इन्तजार कर रही हूँ कि मेरे बच्चे के इलाज के लिए आर्थिक सहायता एवं उचित इलाज करवाने में मेरी मदद करेंगे।

धन्यवाद। प्रार्थनी

जलज शुक्ला, कार्यकारी अध्यक्ष

जे. पी. नगर गली नं. 12, मकान नं. 387, भोपाल

आंगनवाड़ी कामगारों की रैली व प्रदर्शन

सम्भाग में हजारों ने अवकाश लेकर मांग दिवस मनाया

दिनांक 10 जुलाई को आंगनवाड़ी कामगार यूनियन की 500 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहायिकाओं ने रैली व प्रदर्शन कर 10 सूत्री मांगों को लेकर अखिल भारतीय आंगनवाड़ी वर्कस एण्ड हैल्पर्स फेडरेशन के आह्वान के अनुसार मांग दिवस मनाया। इस दिवस को यूनियन की ओर से सामूहिक अवकाश लेकर रैली व प्रदर्शन में शामिल होने का आह्वान किया गया था। उसके अनुसार सम्भाग में अधिकारियों के दबाव व नौकरी से निकालने की धमकियों के बावजूद जितनी अगुवाई करने वाली नेता हैं अपने साधनों से पहुँच कर प्रातःकाल से टाउन हाल में एकत्रित होती गयीं, मौसम की प्रतिकूलता को देखते हुए राजसमन्द, धरियावद से तीन-तीन बसों को कैंसिल करना पड़ा और आगे आने वाले वाहनों ने बताया कि आधी से ज्यादा सामूहिक अवकाश लेकर केन्द्र को बन्द करके अपनी मांगों के समर्थन में अवकाश में रहीं हैं।

विज्ञप्ति में बताया कि इस रैली में उदयपुर, सलुम्बर, धरियावद, राजसमन्द, सराड़ा, गिवा, बडगांव के साथ ही डूंगरपुर से आसपुर, बिछीवाड़ा, चित्तौड़, छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़, अरनोद आदि से भाग लेने के लिए शामिल हुईं।

बरसात के हल्के मुब्बारों के बीच जुलूस दिन की एक बजे बापू बाजार, झीपीरेत, घण्टाघर, हाथीपोल, अश्विनी बाजार होकर जिलाधीश कार्यालय पहुंच कर आम सभा में बदल गयी। आमसभा की अध्यक्षता श्रीमती पुष्पा शर्मा, कंकू अहारी व मंजुला परिहार ने की। तत्पश्चात सभा के संचालक बी. एल. छानवाल ने सम्भागीय दौरे से मिली समस्याओं की रिपोर्ट रखते हुए मीटिंग में खुद कार्यकर्ताओं ने आप बीती की दास्तानें सुनायीं डूंगरपुर से लक्ष्मी जैन कंकू अहारी प्रतापगढ़ से निर्मला सोमर, रजिया बेगम के उपरांत डूंगरपुर से अखिल भारतीय किसान सभा अपाध्यक्ष नारायण लालजी मनात व सीटू राज्य कमेटी के सदस्य साथी बी. एल. सिंघवी ने अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की सचिव मंजू सिंघवी, डी. वाई. एफ. आई. की सदस्या सोहन देवी ने भी सहयोगात्मक अपने अपने विचार रखे।

अन्त में पांच सदस्यों का प्रतिनिधिमण्डल श्रीमती पुष्पा शर्मा के नेतृत्व में कार्यकारी जिलाधीश के मार्फत प्रधानमंत्री व श्रम मंत्री भारत के नाम ज्ञापन दिया, तत्पश्चात अध्यक्ष मण्डल की ओर से पुष्पा जी शर्मा ने ज्ञापन की मांगों के सन्दर्भ में प्रकाश डालते हुए सभी को धन्यवाद देते हुए सभा के समापन की घोषणा की।

[पृष्ठ 22 का शेष]

सिन्हा, का० वीणा मिश्रा, संयुक्त मंत्री—का० गीता झा, का० मंजु प्रकाश, का० जयश्री देवी, कोषाध्यक्ष—का० अर्पणा भट्टाचार्य, कार्यालय मंत्री—प्रमिलासिंह। सम्मेलन का अभिनन्दन किसान सभा की ओर से का० कृष्णकान्त सिंह, बिहार प्रान्तीय खेतीहर मजदूर यूनियन की ओर से यूनियन के अध्यक्ष प्रेम प्रदीप, संसद सदस्य तथा एस.एफ. आई. की ओर से इसके अध्यक्ष अरुण कुमार, ने की।

बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी संघ की ओर से का० राजेन्द्र पटेल, बी. एस. एस. आर. यूनियन की ओर से डी. बक्शी ने भी सम्मेलन का अभिनंदन किया। बिहार राज्य सांस्कृतिक मोर्चा की पटना जिला इकाई प्रेरणा मंच ने वैशाली जिला के जनवादी गीत एवं सबसे सस्ता गोश्त, चेथरुआ का नाटक, मंचन किया।

सम्मेलन में आठ प्रस्ताव पारित हुए।

(सुधा बिन्दु मिश्रा)

महामंत्री

बिहार राज्य जनवादी महिला समिति